सुर नहीं सुरीले

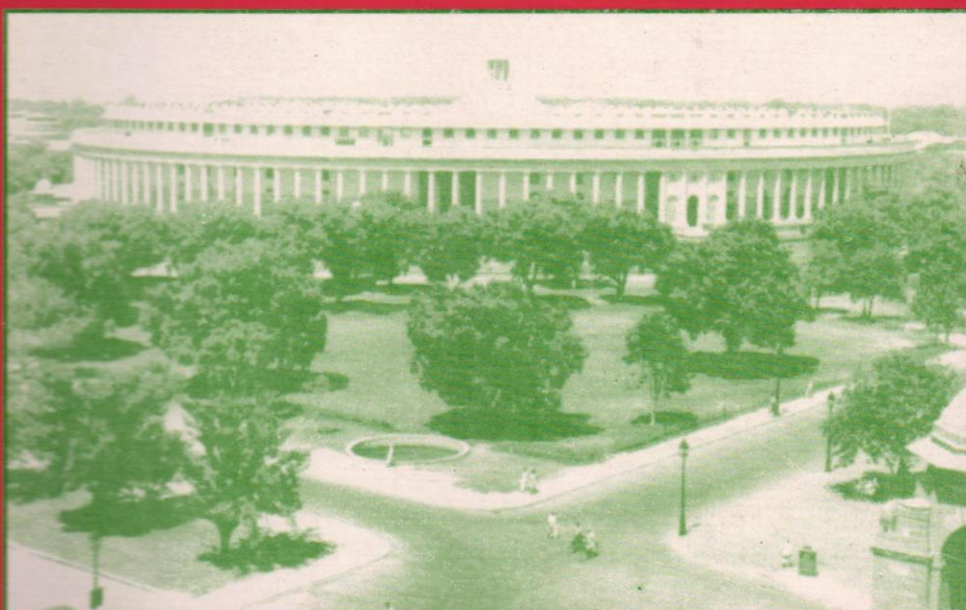

सिद्धेश्वर

सुर नहीं सुरीले

सिद्धेश्वर

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

सुर नहीं सुरीले

सेन्र्‌यू काव्य-संग्रह

सिद्धेश्वर

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
दिल्ली

समर्पण

आत्मीय अनुराग भरे हाथों से भीड़ के उन दधीचियों को,
जो यत्र-तत्र-सर्वत्र अपनी हड्डियाँ गलाते नजर
आते हैं और जिनके हालात ने
सुर नहीं सुरीले
की अभिव्यक्ति के लिए
मुझमें भाव जगाए।

-सिद्धेश्वर

सुर नहीं सुरीले

(सेन्र्यू काव्य-संग्रह)

प्रकाशक : सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग,
दिल्ली-92, दूरभाष : 011-22530652

© : सिद्धेश्वर

E-mail : sidheshwar@hotmail.com

प्रथम संस्करण : मार्च, 2004 ई.

शब्द-संयोजन : सोलूसंस प्वायंट
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-110092
दूरभाष : 011-22059410
011-22530652

मुद्रक : बुकमैन प्रिन्टर्स, दिल्ली-92
फोन : 30945590, 55257458

वितरक : सुधीर रंजन
'दृष्टि', 6, विचार विहार
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-92, दूरभाष 011-22530652

मूल्य : 125 रुपए

Sur Nahien sureele : sanryu poems by Sidheshwar
Rs. 125.00

प्राक्कथन

हाइकु जापानी भाषा का शब्द है। जापान में हाइकु एक लोकप्रिय काव्य विधा है। उस देश में प्राचीन कविता ताँका है, जिसका अर्थ होता है 'लघुगीत'। ताँका 5-7-5-7-7 के क्रमिक वर्णक्रम में पाँच पंक्तियों की कविता है, जिसमें कुल 31 अक्षर हैं। कालांतर में 5-7-5 के क्रम वाली इसकी प्रारंभिक तीन पंक्तियाँ ताँका के बंधन से मुक्त हो गयीं और ये 'होक्यू' कहलायी। धीरे-धीरे यही 'होक्यू' आगे चलकर 'हाइकु' के नये नाम से जापानी ग्रंथ में प्रतिष्ठित हुआ।

वैसे तो सन् 1923 ई० में प्रकाशित गुरुदेव **रवीन्द्रनाथ टैगोर** की बंगला पुस्तक 'जापान यात्री' में हाइकु की चर्चा के साथ ही भारत में हाइकु कविता की शुरुआत हुई, पर हिन्दी में हाइकु का प्रारंभ सन् 1959 में प्रकाशित **अज्ञेय** के काव्य-संग्रह **'अरी ओ करुणा प्रभामय'** से माना जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में हिंदी हाइकु का यह पैतालिसवाँ साल है। यद्यपि हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक **डॉ. नामवर सिंह** के कथनानुसार हाइकु केवल एक छंद, एक काव्य नहीं, बल्कि एक पूरी संस्कृति है, फिर भी विगत दो दशकों में अकेले हिंदी में हाइकु कविता के क्षेत्र में बड़ी तेजी से सृजन हुआ है, पर वर्षों पुराना होते हुए भी चलन एवं चर्चा में अभी अपर्याप्त है। हाँ, इतना अवश्य है कि जहाँ हिंदी पाठकों को एक नयी काव्य-धारा का आस्वाद मिला, वहीं रचनाधर्मी को अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक नया आयाम मिला। आज यह हिंदी कविता की एक महत्वपूर्ण विधा होने की ओर अग्रसर है। छंद मुक्त होने की वजह से काव्य क्षेत्र में अरसे से दिखाई देनेवाले ठहराव को अपनी-अपनी तरह से जोड़ने और पाठकों से संवाद स्थापित करने की कोशिश हुई है।

कंप्यूटरीकरण और इलेक्ट्रॉनिकीकरण के इस युग में कम समय में ही अनंत

आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए व्यग्र मनुष्य को साहित्य में हाइकु जैसी विधा ही उसे सबसे ज्यादा उपयुक्त विधा लग रही है और इस शताब्दी में दुनिया की सबसे छोटी काव्य-विधा के रूप में संभवत: हाइकु की सबसे बड़ी प्रासंगिकता होगी। तब यह हाइकुकारों पर निर्भर करता है कि इतनी बड़ी चुनौती का सामना सिलिकान की तरह 17 वर्णों में कविता के कितने आयाम समाहित कर सकते हैं, क्योंकि किसी भी हाइकु में कविता के जितने भी अधिक आयाम समाहित होंगे, हाइकु उतना ही महत्वपूर्ण होगा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के जापानी भाषा विभाग के अध्यक्ष रह चुके डॉ० सत्यभूषण वर्मा जब हाइकु को शब्द की साधना कहते हैं, तो उसके मूल में यह बात कहीं न कहीं अवश्य है और वस्तुत: जिस कविता में एक-एक अक्षर की उपादेयता हो, उसकी महत्ता हो, वहाँ इसका किंचित अपव्यय कैसे स्वीकार्य हो सकता है? इस प्रकार हाइकु में जब तक तीनों पंक्तियों के स्वतंत्र अस्तित्व को नहीं समझा जाएगा, किसी अच्छे हाइकु का सृजन आसान नहीं।

5-7-5 के वर्णक्रम में हाइकु तीन पंक्तियों की एक ऐसी कविता है, जिसमें सभी पंक्तियों के बीच एक सामंजस्य होता है तथा प्रत्येक पंक्ति की अलग-अलग अपनी सार्थकता होती है। इसमें मात्राओं या अर्धवर्णों की गणना नहीं होती है। इसके साथ ही इसमें गहन भावों की अभिव्यक्ति की क्षमता भी होती है। कहने का तात्पर्य यह कि हाइकु कविता में न केवल शब्दों का अनुशासन होता है बल्कि कविता का अनिवार्य भाव भी समाहित होना चाहिए, अन्यथा यह बिना प्राण-प्रतिष्ठा के निर्जीव शरीर मात्र रह जाएगी। इस तरह लघुता और सूक्ष्मता हाइकु का एक विशिष्ट गुण है, जो लोकप्रियता का एक प्रमुख आधार भी है।

आधुनिक हिंदी काव्य के कथ्य की लगभग सभी प्रवृत्तियाँ हाइकुकार तथा जापानी भाषा के मर्मज्ञ **डॉ० सत्यभूषण वर्मा** की 1981 में प्रकाशित पुस्तक **'जापानी हाइकु और आधुनिक हिंदी कविता'** ने हिंदी में हाइकु कविता के सृजन के लिए ऐसी उर्वर भूमि तैयार कर दी है कि अब हाइकु कविता एक आंदोलन का रूप लेती प्रतीत हो रही है। डॉ० वर्मा के अनुसार "जिस प्रकार

हाइकु जीवन की कविता है, प्रकृति केवल उसका एक माध्यम है, उसी प्रकार सेन्र्यू भी हाइकु की तरह जीवन की एक कविता है, पर उसका माध्यम मनुष्य और मनुष्य की दुर्बलता है।"

दरअसल जापानी प्रवृत्तियों के अनुसार हाइकु में प्रकृति के माध्यम से जीवन-दर्शन होना चाहिए। हाइकु कवि अपनी बात प्रकृति के माध्यम से कहना अधिक पसंद करता है। इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि जापान में अधिकांश कवि संत रहे हैं। ये संत मुख्यत: जैन साधक थे। ये संत अपरिग्रही जीवन व्यतीत करते थे। इसलिए जापान में हाइकु से प्रकृति की अभिन्नता सदैव जुड़ी रही है।

भारतवर्ष में जो जापानी हाइकु रचनाकारों द्वारा अपनाया गया है, उसे हाइकु के रूप में हाइकु तथा सेन्र्यू दो विधाओं के मिले-जुले स्वरूप को अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण किया गया है। हाइकु के दो रूप या भेद हैं- **हाइकु और सेन्र्यू।** जहाँ **हाइकु** जीवन और प्रकृति के कार्य व्यापारों की भावात्मक अभिव्यक्ति की कविता है, वहीं **सेन्र्यू** मनुष्य की दुर्बलताओं अथवा दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य अथवा पैरोडी है। कहने का तात्पर्य यह है कि हाइकु में प्रकृति महत्वपूर्ण है और **सेन्र्यू** में मनुष्य। मानवीकरण की प्रवृति **सेन्र्यू** में अधिक मिलती है। बिंब से इतर कथ्य को समेटने के लिए **सेन्र्यू काव्य विधा**, जो शिल्प में हाइकु से बहुत मिलती या उद्भूत है, का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार उर्दू में ग़ज़ल, हज़ल है, उसी प्रकार हाइकु का ही एक अन्य रूप है **सेन्र्यू** । **सेन्र्यू** भी तीन पंक्तियों की 5-7-5 वर्णक्रम की 17 वर्णी कविता है।

अज्ञेय के बाद हिंदी में हाइकु को आंदोलन के रूप में उठाने का प्रयत्न रीवाँ के **प्रो० आदित्य प्रताप सिंह** ने किया। उन्होंने हाइकु और **सेन्र्यू** नाम से बहुत-सी कविताएं लिखीं और अनेक रचनाकारों का हाइकु-**सेन्र्यू** लेखन की दिशा में प्रेरित भी किया। उनके प्रयत्नों से उ०प्र० के जौनपुर जिसे में 'तरुण' नामक मासिक पत्रिका का एक **'हाइकु विशेषांक'** भी प्रकाशित हुआ।

प्रो० आदित्य प्रताप सिंह की दो कविताओं को देखें -

अमर बेल **दिल्ली छोड़ती**
पेड़ में परजीवी **हर क्षण केंचुल**
विप्र जनेऊ **गंदी फिर भी**

इसी प्रकार प्रसिद्ध हाइकुकार कमलेश **भट्ट 'कमल'** के सेन्र्‌यू की इन पंक्तियों को देखें-

फूल-सी पली
ससुराल में बहू
फूस-सी जली

आज के समाज की ज्वलंत समस्या को कितने कम शब्दों में **श्री 'कमल'** ने अभिव्यक्ति की सहजता एवं संप्रेषण की गहनता के साथ 5-7-5 के क्रम में निबद्ध किया है कि सहज ही वह पाठक का ध्यान आकृष्ट करने में सक्षम है। श्री कमल हाइकु के **सेन्र्‌यू** की ओर उन्मुख हुए हैं।

रायबरेली में तो उनके उपर्युक्त हाइकु ने अनेक रचनाकारों को सेन्र्‌यू कविता लिखने की प्रेरणा दी। गोविंद नारायण मिश्र, शिवा श्रीवास्तव, शंभुदयाल सिंह 'सुधाकर', राजेंद्र बहादुर सिंह, जवाहर इंदु, रामनिवास पंथी, रामनारायण रमण तथा शंभुशरण द्विवेदी 'बंधु' जैसे साहित्यकार उससे प्रोत्साहित होकर इस विधा को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में तत्पर हुए।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मैंने भी इन साहित्यकारों की पंक्ति में अपने को खड़ा पाया जिसका परिणाम था मेरा प्रथम हाइकु काव्य-संग्रह—**पतझर की सांझ**। इस संग्रह में **'अपनी ओर से'** के तहत मनुष्य या मनुष्य की दुर्बलताओं पर आधारित सेन्र्‌यू कविताओं के साथ अगले पड़ाव पर पाठकों से मिलने की बात मैंने की थी। प्रस्तुत काव्य-संग्रह वही पड़ाव है, जहाँ जीवन एवं मानव संबंधों की अनेक परतें खोली गयी हैं। जीवन की बहुरंगी परिस्थितियों तथा बनते-बिगड़ते सामाजिक मूल्यों एवं रिश्तों को उजागर करती चुटीली-चुभती **सेन्र्‌यू** कविताएँ हैं। पाठकों की सुविधा के ख्याल से मैंने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए इन विषयों का चयन किया है—इंसान, बुद्धिजीवी, समाज,

नारी, तसलीमा नसरीन, कवि तोमर, धर्म, लोकतंत्र, राजनीति, चुनाव, घोटाला, भ्रष्टाचार, गांव, गरीबी, किसान, पटेल और कारगिल।

हमारा यह प्रयास रहा है कि इस **सेन्र्यू** काव्य संग्रह में व्यापक मानवीय संबंधों की पीड़ा-आह्लाद, हास-रुदन, उतार-चढ़ाव, संगति-विसंगति, निष्ठुरता-संवेदना तथा समाज, धर्म एवं राजनीति की विद्रुपताओं-विडंबनाओं को संयुक्त रूप से समाहित करें तथा वे कविताएँ हँसती-बोलती-सी, बतियाती-सी मालूम पड़ें और साथ ही पाठक-मन को आंदोलित भी करें। इसके पठन से पाठकों को ऐसा अवश्य लगेगा कि वह अपने आसपास छितराए समाज-जीवन की तीव्रगामी स्थितियों-घटनाक्रमों का प्रत्यक्षदर्शी है। इन कविताओं में सामाजिक यथार्थ को परोसने का प्रयास इसलिए किया गया है कि सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष को नजरअंदाज़ करना आज के दृष्टि-संपन्न साहित्यकारों के लिए न तो संभव है और न ही लाज़िमी। इस ख्याल से पूरी कविताओं में उनकी स्थितियों, विसंगतियों और उनके बीच मानवीय दृष्टि की आभा का समावेश करने में मैंने कोई कोताही नहीं की है। आज के तनावग्रस्त, आपाधापी और पाठकीय समय-संकट को दृष्टिगत रखते हुए लिखी गई कविता कहाँ तक सफल समझी जाएगी, यह तो पाठक अथवा आलोचक ही बताएंगे। बहरहाल इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बिना कोई पूर्वाग्रह के मैंने अपनी अन्त:प्रज्ञा को इन काव्यों में पूरी तरह प्रदीप्त करने का प्रयास किया है। इसके स्वर, जो अपनी धरती, अपनी अस्मिता और अपनी राष्ट्रीयता से जुड़े हैं, में लोकानुरंजन के साथ-साथ लोकहित का भाव अनुस्यूत है। मैंने इसे न तो फैशन के लिए रचा और न ही छपास के लिए। इसका काव्य जीवन की नाना परिस्थितियों के आरोह-अवरोह से प्रभावित है। मेरी व्यक्तिगत, अनुभूतियों, कल्पनाओं और विचारों की निष्ठापूर्ण अभिव्यक्तियाँ हैं इनमें। इसके मूल में निहित पुष्कल आयामों ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया। विषमताओं से घिरा संघर्षशील, संत्रस्त-परिवेश का पथिक, थोड़ी देर के लिए ही सही काव्य-कानन में भूला रहे, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भावुक मन, भावनाओं

में बहना मेरी नियति रही है।

कविता चाहे किसी भी युग में और किसी भी देश में लिखी जाए, उसका मूल स्वर प्राय: एक जैसी संवेदना, कल्पना और संतुलनशीलता से सराबोर रहता है। अनुभूतियाँ मन के आकाश में इस कदर बेहिचक तैरती हैं कि अभिव्यक्ति के लिए शब्दों की कसरत का सवाल ही नहीं उठता-भाषा अनायास भावना की संवाहिका बन जाती है। ऐसे क्षणों में कवि का रचना-संसार न बेवजह संत्रस्त रहता है, न उसे विषय-वस्तु की संकीर्णता के दायरों से छटपटाना पड़ता है और न संप्रेषण की बाधाएं उनकी राह रोकती हैं। पूर्वगृहीत बिंब स्वयं कवि तक संप्रेषित होते हैं और फिर उनसे साधारणीकृत होने पर अपनी वाणी को शब्दों का ऐसा रूप देता है कि संवेदनशील पाठकों के लिए वह सहधर्मिता के साथ संप्रेषणीय बन जाती है।

वैसे सच कहा जाय तो मैं मूलत: हिंदी साहित्य की गद्य विधाओं से जुड़ा रहा हूँ, पर हाइकु की सामर्थ्य और अभिव्यक्ति के विस्तार को लघुकाया में समेटने की क्षमता ने मुझे भी इस ओर आकर्षित किया है। प्रसन्नता इस बात की है कि अब तो खंडकाव्यों के सृजन में हाइकु के प्रयोग की भी चर्चा प्रकाश में आ रही है। इससे इसका भविष्य निरंतर शाश्वतता की ओर उन्मुख है।

इस संग्रह की कविताएँ पूर्णत: वर्तमान पर केंद्रित हैं। न अतीत और न भविष्य, काल के निरंतर प्रवाह में से वर्तमान क्षण की संपूर्ण अनुभूति को उसकी समस्त जीवंत संभावनाओं को शब्दबद्ध करना हमारा लक्ष्य रहा है। आधुनिकता का भाव-बोध और उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति का आग्रह इसकी कविताओं का केंद्रीय तत्व है। भारतीय जीवन के विद्रोही रूप ने उसके भाव जगत को गढ़ा है और कविता ने उठते मुक्त स्वर को वाणी दी है।

यह कहना यथोचित है कि आज व्यक्ति और समाज का जीवन एक भयानक संक्रांति से गुजर रहा है। सामाजिक संबंधों में विघटन, आदमी का नैतिक पतन, धर्मान्धिता का दौर, स्वार्थ प्रेरित दलगत राजनीति, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण आदि प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। इस बढ़ती भयावह स्थिति में स्थापित

मूल्यों का अप्रासंगिक हो जाना स्वाभाविक है, पर इससे उत्पन्न संत्रास, पीड़ा, घुटन, कुण्ठा और अजनबीपन को निरंतर उकेरना तथा गिरते मूल्यों-मर्यादाओं को पुन: प्रतिष्ठित करना ही इस संग्रह की रचनाओं का उद्देश्य रहा है। इसलिए मेरे इन स्वरों में कहीं आग मिलेगी, तो कहीं बिलखती करुणा भी होगी। इसके स्वर जन-जन के दुख-दर्द लिए हुए हैं। इनमें किसी की पीड़ा के इज़हार हैं, किसी के अभावग्रस्त जीवन का चित्रण तो किसी के रुदन का वर्णन भी है।

आज भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, पक्षपात, ईर्ष्या, द्वेष, बेईमानी, घृणा, अनैतिकता आदि दुर्गुण हमारे भारतीय समाज के खून में इस तरह रच-बस गया है कि हम स्वार्थ से परे कुछ सोच ही नहीं पा रहे हैं। आधुनिकता के दौर में हम अपने आप में सिमटते चले जा रहे हैं। अपने स्वार्थ हित में हम सब अलग-अलग राग अलाप रहे हैं। इसीलिए हमारे सुर सुरीले नहीं हैं। सुर तो सुरीले तब होंगे जब हम सब मिलकर अपने समाज और देश के लिए सोचेंगे, करेंगे। कुछ इसी भाव से प्रभावित होकर इस संग्रह का नाम भी 'सुर नहीं सुरीले' रखा गया है।

मैं हृदय से आभारी हूँ हिन्दी साहित्य के सुपरिचित हस्ताक्षर तथा **पद्मश्री डॉ० लक्ष्मीनारायण दूबे** का, जिन्होंने इस काव्य संग्रह पर प्रेरणा के दो शब्द व्यक्त कर मुझे अनुप्राणित किया है।

इस संग्रह के प्रणयन में अपने मार्गदर्शक प्रो० राम बुझावन सिंह का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया है। मनीषी विद्वान साहित्यकार **डॉ० भगवतशरण अग्रवाल**, जिन्होंने इसकी भूमिका लिखकर मुझे उपकृत किया है, के प्रति आभार प्रकट करना मेरे लिए गौरव का विषय है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक डॉ० राजेन्द्र गौतम तथा आर०आर०एस० कॉलेज, मोकामा, पटना के हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० शिवनारायण** के प्रति मैं शुक्रिया अदा करता हूँ, जिन्होंने इस संग्रह पर अपने अभिमत लिखकर इसकी स्तरीयता में इजाफा किया है। आदरणीय **प्रो० रामबुझाबन बाबू, कवि गोपीवल्लभ सहाय**, **श्री**

गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव तथा **श्री बांकेनंदन प्रसाद सिन्हा** का मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समय-समय पर समुचित सहयोग प्रदान कर मुझे निरंतर उत्साहित किया है। भाई धनंजय श्रोत्रिय को धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता, जिन्होंने इस पूरे संग्रह को व्याकरण व वर्तनी के ख्याल से संतुलित एवं एकरूपता प्रदान करने में सहयोग किया। आमतौर पर पुस्तक के प्रकाशन में अधिकांश लेखकों को जिन आर्थिक कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है, इसके लेखक को भी उसका जबर्दस्त सामना करना पड़ा। इसकी भूमिका के लेखक डॉ. भगवतशरण अग्रवाल ने कई बार पुस्तक के प्रकाशन के लिए मुझे स्मरण भी दिलाया, बावजूद उसके मेरे कदम नहीं बढ़ पा रहे थे। यह तो महज संयोग कहिए कि पिछले 7 दिसंबर 2003 को पटना के बी.एन. कॉलेज के हिंदी लेक्चर थियेटर में एक आयोजन के सिलसिले के दौरान राँची से पधारे मित्र एस.के. राव से मेरी मुलाकात हो गयी, जिन्होंने अपनी उदार हृदयता का परिचय देकर सितंबर 1999 से लंबित इसकी पांडुलिपि के प्रकाशन को सहज बनाया। मैं तहेदिल से उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन की ओर से सुधीर रंजन ने इसे पुस्तक का रूप दिया। साधुवाद।

मेरे परिवार के सदस्य **सुनीता रंजन, दिलीप, सुधांशु, अंजलि** तथा **दीपक** धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने मेरी पांडुलिपि का कंप्यूटर पर शब्द-संयोजन कर सहयोग किया है।

–सिद्धेश्वर

'दृष्टि', 6, विचार विहार,
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-92, दूरभाष-011-2230652

अभिमत

'सुर नहीं सुरीले' की सेन्र्यू कविताओं का इंद्रधनुषी आस्वाद

किसी भाषा के साहित्य में अधिक से अधिक कितनी विधाएं हैं, जिनके द्वारा किसी समाज के समस्त जीवनानुभवों को समेटते हुए उसके उच्चादर्श के यथार्थ को प्रस्तुत किया जा सके, यह जानना महत्वपूर्ण है, किंतु इस तथ्य से अवगत होना भी महत्वपूर्ण है कि किसी भाषा के साहित्य में अन्य भाषा की विधाओं को आत्मसात् करते हुए उसे अपने समाज के जीवनानुभव की अभिव्यक्ति-माध्यम के रूप में ग्रहण की उदारता है अथवा नहीं? इस दृष्टि से देखें तो हिंदी की उदारता अधिक संपन्न है। अन्य भाषाओं से आई हिंदी की विधाओं में ग़ज़ल, रुबाई, शेर, उपन्यास आदि की अप्रतिम लोकप्रियता एवं उसमें भारतीय समाज के जीवनानुभवों की चतुर्दिक विकास-यात्रा ने उन्हें हिंदी-मानस से गहरे जोड़ दिया है। इधर जापानी काव्य-विधा हाइकु एवं सेन्र्यू का प्रचलन भी हिंदी में बेतहाशा बढ़ा है। आधुनिक हिंदी कविता ने क्योंकि पश्चिम जगत की कविताओं से बहुत कुछ लिया है, इसलिए स्वाभाविक है कि अनुभूति, कल्पना और अभिव्यक्ति के स्तर पर हिंदी के कवियों में पाश्चात्य काव्यविधाओं के प्रति आकर्षण हो और जो काव्यविधा हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ढलकर हिंदी समाज के जीवनानुभव को अधिक अभिव्यक्त करे, उसका तेजी से विकास हो। जापानी काव्यविधा हाइकु या **सेन्र्यू** के हिंदी में अधिक प्रच्लन के मूल में यही भावना रही, जो कि इतना तो मानना पड़ेगा कि आज के यांत्रिक युग में जबकि व्यक्ति के लिए समय का घोर अभाव हो गया है, वहाँ लघुकाय विधा होने के कारण भी हाइकु के प्रचलन ने जोर पकड़ा। भारत में सन् 1981 ई० में जवाहरलाल

नेहरू विश्वविद्यालय के जापानी भाषा विभाग के अध्यक्ष **डॉ० सत्यभूषण वर्मा** की एक पुस्तक छपी–**'जापानी हाइकु और आधुनिक हिंदी कविता'**, जिसने हिंदी के हाइकु कवियों का व्यापक मार्गदर्शन किया और उसके बाद अनेक हाइकुकार इस विधा के विकास में गंभीरतापूर्वक सक्रिय हुए। हिंदी में हाइकु लिखनेवाले कवियों में आदित्य प्रताप सिंह, गोविन्द नारायण मिश्र, कमलेश भट्ट कमल, शिवा श्रीवास्तव, शंभुदयाल सिंह 'सुधाकर', जवाहर इन्दु, राजेन्द्र बहादुर सिंह, रामनिवास पंथी, उर्मिला कौल, रामनारायण रमण, शंभुशरण द्विवेदी आदि नाम अब प्रतिष्ठित हो चुके हैं। कवियों की इसी श्रृंखला में बिहार के विविध आयामी रचनाधर्मिता के ऊर्जावान कवि **सिद्धेश्वर** भी हैं, जिन्होंने पूरी गंभीरता से इस जापानी काव्यविधा को अपनी सृजनधर्मिता का माध्यम बनाते हुए उसके विकास की धारा को समृद्ध किया। 1998 ई० में उनकी हाइकु कविताओं का पहला संग्रह **'पतझर की सांझ'** का प्रकाशन हुआ, जिसमें प्रकृति, साहित्य, संस्कृति, हिंदी, कविता, श्रृंगार, राष्ट्रचेतना, वेदना एवं पर्यावरण से संबंधित 559 हाइकु संग्रहीत थे। इस पुस्तक की पूरे देश में काफी चर्चा हुई।

जापानी काव्यविधा हाइकु में मूलत: प्रकृति के विविध रंगों का ऐसा जीवंत चित्रण होता है कि उसमें अपने समय एवं चिंतन की जीवन-संस्कृति मूर्त्त हो उठती है, किंतु जब वह दूसरी भाषा के साहित्य में आत्मसात् होने की प्रक्रिया से गुजरता है, तो अपना स्वभाव खोकर उस भाषा के साहित्य की प्रकृति में व्यवहृत हो उसके देश-काल परिस्थिति सापेक्ष हो जाता है। हिंदी में आत्मसात् होने के बाद हाइकु के साथ भी यही हुआ। जापानी हाइकु के मूल में प्रकृति थी तो हिंदी हाइकु में प्रकृति के साथ जीवन, समाज, राजनीति आदि का समावेश हो गया। हाइकु अपने एक अन्य रूप **सेन्र्यू** नाम से भी जाना जाता है, जिसके केन्द्र में मनुष्य, मनुष्य की दुर्बलता तथा मनुष्य के दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य या पैरोडी है। इसमें मानवीकरण की प्रवृति अधिक होती है। प्रसन्नता की बात है कि लब्धप्रतिष्ठ सृजनधर्मी कवि सिद्धेश्वर की **सेन्र्यू** कविताओं की पुस्तक **'सुर नहीं सुरीले'** प्रकाशित हो रही है, जिसमें इंसान, बुद्धिजीवी, समाज, नारी, धर्म, लोकतंत्र, राजनीति,

गाँव, गरीबी, किसान, नारी, तसलीमा, भ्रष्टाचार, सरदार पटेल, कारगिल से संबंधित **सेन्र्यू** हैं। इन **सेन्र्यू** कविताओं द्वारा जीवन की विकृत प्रवृत्तियों एवं मनुष्य की दुर्बलताओं पर गहरे व्यंग्य किए गए हैं।

आज के कंप्यूटरीकरण के युग में उपभोक्तावादी संस्कृति से त्रस्त इंसान अपनी इंसानियत की रक्षा में कितना निःसहाय हो गया है, छद्म जीवन जीने को अभिशप्त हो गया है और इस समस्त जद्दोजहद में अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए लगातार संघर्षरत है, इसे कवि सिद्धेश्वर ने अपनी **सेन्र्यू** कविताओं में बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है, उदाहरणार्थ कुछ **सेन्र्यू** देखे जा सकते हैं-

1. मददगार
नहीं आज आदमी
आदमियों का

2. हो गया आज
जन तमाम यहां
बहरूपिये

3. करता वार
पीछे से वह सदा
सामने नहीं

4. खाता आदमी
अपने आप को भी
भेड़िया बन

5. छला गया है
बार-बार देश में
आम आदमी

6. इंसान वही
जीवन की सुगंध
औरों को भी दे

देश-समाज के मार्ग-निर्देश में बुद्धिजीवियों की भूमिका पर कटाक्ष करते हुए इन **सेन्र्यू** के माध्यम से कवि यथार्थ के कितना करीब है, देखें-

1. भूल चुके हैं
रास्ता दिखाने वाले
स्वयं ही रास्ता

2. प्रबुद्धजन
आज भी उदासीन
देश के प्रति

3. लड़ाई आज
बदलाव की नहीं
हिस्सेदारी की

भारतीय गाँवों की बदहाली, गरीबी के संत्रास तथा नारी के प्रति समाज की असहिष्णु दृष्टि के लिए कवि की वेदना मुखर होती है और उसके कारणों की तलाश में वे अपने समय के तल्ख सच से किस प्रकार रचनात्मक संघर्ष करते हुए व्यवस्था एवं स्थितियों पर कटाक्ष करते हैं, इसे इनकी **सेन्र्यू** कविताओं में देखा जा सकता है-

1. सूखा या बाढ़
कुदरत की मार
गाँव उजाड़

2. आंगन पानी
छप्पर टप टप
हाल गरीबी

3. ख्वाब टूटे तो
मायूस मत होना
जगाएगा वो

जिन विषयों पर कवि द्वारा किए गए व्यंग्य की चर्चा ऊपर हुई है, वह अधूरी रह जाएगी, यदि उसे लोकतंत्र, राजनीति, धर्म, भ्रष्टाचार आदि ज्वलंत सामायिक विषयों के संदर्भ में कवि द्वारा व्यक्त टिप्पणियों के आलोक में न निरखें-परखें, क्योंकि वर्तमान देश-काल का यथार्थ उसके समानुपातिक गति में अपना प्रभाव छोड़ता है। लोकतंत्र सर्वोत्तम शासन-व्यवस्था होकर भी अनेक विसंगतियों के मकड़जाल में आज किस दर्दनाक मोड़ पर आ गया है, उसे कवि के शब्दों में ही देखें-

1. है लोकतंत्र दर्दनाक मोड़ पर आज हमारा	2. कैसे बढ़ेगा हो नेता ही लुटेरा देश हमारा	3. कुतर रहे लोकतंत्र की जड़ें नेता ही आज
4. कितनी नींदें जिन्हें पाने में खो दी खोटा निकला	5. लोकतंत्र में संसदीय चुनाव पावन नाव	6. संघर्ष किया अंग्रेजों के खिलाफ पर क्या पाया?

लम्बे संघर्षों के द्वारा अपनी दासता से मुक्त होने के बाद जिस लोकतंत्रिक शासन व्यवस्था से खुशहाल जीवन की कल्पना को साकार करने की कोशिश हुई, उसे यहाँ की राजनीति ने किस प्रकार क्षत-विक्षत किया और वह केवल कुछ लोगों की सुख-सुविधाओं के निमित्त होकर ही रह गई, इस जाल को खोलते हुए कवि अपने समय के यथार्थ से तो साक्षात्कार कराता ही है, समाज की दुर्दशा पर कवि का विषाद भी गहरी करुणा से हमें आप्लावित कर देता है। इस भाव के कुछ चित्र देखें-

1. सोचते नेता सूखी आंत दीनों की भेड़िये-सा ही	2. ढूँढ़ना आज है हो रहा मुश्किल बेदाग नेता	3. नेता के लिए कुर्सी ही माई-बाप जनता सिक्का

समकालीन राजनीति को अपनी फाँस में लेते हुए धर्म ने समाज के सभी हिस्सों को किस प्रकार बेचैन कर रखा है, देखें-

1. है आजकल अधिकतर स्वामी सत्ता दलाल	2. सिखाया जाता साधना की आड़ में पलायन ही	3. अभाव नहीं धर्म-ठेकेदारों में अज्ञानता का

कवि की दृष्टि उस आतंकवाद पर भी गई है जिससे न केवल भारत पिछले दो दशक से जूझ रहा है बल्कि जिसका दंश आज पूरी दुनिया झेल रहा है। कवि की कुछ **सेन्र्यू** कविताओं को देखें-

1. आतंकवाद	2. आतंकवाद	3. जम्मू-कश्मीर
से परेशान आज	ने हमारी नींद भी	आतंकवादियों का
पूरी दुनिया	किया हराम	बना निशाना

'सुर नहीं सुरीले' के कवि ने प्रकृति, मनुष्य एवं देश-समाज की जटिल परिस्थितियों से सृजनात्मक द्वन्द्व करते हुए उसके विविध अवयवों यथा बुद्धिजीवी, गाँव, गरीबी, किसान, नारी, धर्म, लोकतंत्र, राजनीति, भ्रष्टाचार, चुनाव आदि से संबंधित विषयों पर जो टिप्पणी की हैं, उससे उनके मानस का सृजन इस संग्रह में खुल-खिलकर प्रकट हुआ है। इस मानी में कवि ने अपने समय के सच को जिस रूप में दस्तावेज के रूप में काल विशेष का इतिहास अपने में आत्मसात किए हुए हैं और यही आज के साहित्य की सार्थकता भी है। **'सुर नहीं सुरीले'** की **सेन्र्यू** कविताएँ इन्द्रधनुषी आस्वाद लिए हुए हैं, जो हर प्रकार की रुचि के पाठकों को संतृप्त करेंगी तथा इस संग्रह के प्रकाशन से हिन्दी में हाइकु एवं **सेन्र्यू** के विकास को भी चतुर्दिक गति मिलेगी, ऐसा मुझे विश्वास है। अस्तु!

-डॉ० शिवनरायण,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
आर०आर०एस०कॉलेज, मोकामा
पटना-803302

सीधी सच्ची चोट करनेवाला संग्रह

सफर में था। सिद्धेश्वर जी का साथ! गाड़ी में ही जब उनका कार्यालय खुल गया तो वे काम में डूब गए। मैंने भी उनसे पढ़ने को कुछ माँगा। उन्होंने अपने प्रकाश्य **सेन्र्‌यू** काव्य संग्रह 'सुर नहीं सुरीले' के कम्पोज्ड फर्मे थमा दिए। पढ़ना शुरू किया, मैं उनमें डूबता चला गया। विचारों की लड़ियाँ पिरोई हुई थीं। एक जगह तो ऐसा झटका लगा कि संभल हीं नही पाया। इनकी पंक्तियों को पढ़कर-संघर्ष किया/ अंग्रेजों के खिलाफ/ पर क्या पाया? और मैं देर तक इस 'पर क्या पाया' का उत्तर खोजता रहा। यह तो कैसे कहें कि कवि पाए हुए का विवरण निश्चय ही नहीं जानना चाहता, पर शायद कहना यही चाहता है कि इन पाँच दशकों में भारत के नागरिक को मिला तो कुछ भी नहीं। आज एकदम खाली हाथ! यह छटपटाहट और व्यंग्य **'सुर नहीं सुरीले'** का केंद्रीय स्वर है। सेन्र्‌यू हाइकु का ही एक रूप है। हाइकु प्रकृति केन्द्रित है और सेन्र्‌यू व्यक्ति केंद्रित। मैं उनकी हाइकु कला से **'पतझर की सांझ'** के माध्यम से परिचित हो चुका था। मैंने पाया कि **सुर नहीं सुरीले** का क्षितिज बहुत कायम है। इसमें उन्होंने समाज से लेकर सरदार पटेल तक, कारगिल से लेकर किसान तक और नारी से लेकर घोटालों तक अपनी कलम चलाई है। बुद्धिजीवी और किसान, धर्म और गरीबी कवि की पैनी धारदार कविता का विषय बने हैं। इस बेसुरे परिप्रेक्ष्य में रागों का सुरीला होना संभव नहीं था। कवि **पतझर की सांझ** से भी अधिक सीधी और सपाट भाषा की ओर बढ़ा है ताकि चोट वजनदार हो सके। नारी के संदर्भ में उनका यह कथन **'कड़कती है/जब कभी बिजली/ सहम जाती'**। हमें खतरनाक एवं खौफजदा हालात् के रू-ब-रू खड़ा कर देती है। और फिर यह **मोहभंग: /कितनी नींदें/ जिन्हें पाने में खोयी/ खोटा निकला!** यहाँ भी **'पर क्या पाया'** की प्रतिध्वनि गूँज उठती है। यदि इस संग्रह में व्यक्ति परक मंथन की सादगी/ **है तसलीमा/ मयमन सिंह की/ सुगंध-माटी में देखी जा सकती है तो/ तेज चाकू से/ धर्म का उत्सव हो/ कैसा जमाना** में धर्म के पाखंड को भी उधेड़ा गया है। समग्रत: यह संग्रह आम आदमी के लिए ग्राह्य है, क्योंकि वह इसकी बात उसी की भाषा में कहता है।

–डॉ० राजेन्द्र गौतम

रीडर, रामलाल आनन्द कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

भूमिका

जीवन सरगम को मुखरित करता 'सुर नहीं सुरीले'

'सुर नही सुरीले' श्री सिद्धेश्वर का दूसरा हाइकु काव्य संग्रह है। इससे पहले उनका एक हाइकु काव्य संग्रह **'पतझर की सांझ'** में लगभग 661 हाइकु 1. प्रकृति, 2. साहित्य, 3. संस्कृति, 4. हिन्दी, 5. कविता, 6. श्रृंगार, 7. राष्ट्र चेतना, 8. वेदना, 9. पर्यावरण शीर्षकों के अंतर्गत प्रकाशित हुए थे। जापानी हाइकुकारों के अंग्रेजी में अनूदित जो हाइकु संग्रहीत हैं। लेकिन एक ही विषय पर एक ही हाइकुकार की 159 तक रचनाएँ, अपने आप में एक उपलब्धि है। वैसे इधर हिन्दी में कुछ मित्र एक ही विषय पर अनेक हाइकुओं की रचना कर रहे हैं, यह मैं जानता हूँ। कुछ ने तो उन्हें **हाइकु-भारती** में प्रकाशन के लिए भी भेजा था। कुछ मित्र **'हाइकु'** को केवल एक छंद मात्र स्वीकार कर हाइकु-गीतों की रचना कर रहे हैं ओर कुछ हाइकु खण्डकाव्य की रचना एवं प्रकाशन में व्यस्त हैं। इससे हम एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिन्दी हाइकुकार हाइकु के 5-7-5 के वर्णक्रम को ही प्रधानता दे रहे हैं। यह एक जटिल विषय है और इस पर विस्तार से चर्चा होना आवश्यक है। या तो हमें इसे स्वीकृत कर इसे हाइकु का हिंदीकरण कहना पड़ेगा या फिर भविष्य में समीक्षक ऐसे हाइकुओं में काव्यगुणों के अभाव में इन्हें हाइकु नहीं मानेंगे।

यह सब चर्चा मुझे इसलिए भी करनी पड़ रही है कि सिद्धेश्वर के दूसरे संग्रह **'सुर नहीं सुरीले'** में जो आठ सौ के लगभग रचनाएँ हैं वे भी विभिन्न 14 विषयों के अंतर्गत विभाजित हैं यथा 1. इंसान, 2. बुद्धिजीवी, 3. समाज, 4. कवि तोमर, 5. नारी, 6. राजनीति, 7. धर्म, 8. लोकतंत्र, 9. भ्रष्टाचार, 10. गांव, 11. गरीबी, 12. किसान, 13. सरदार पटेल, 14. कारगिल। इस संग्रह में कवि ने इन्हें हाइकू न कहकर **सेन्र्यू** कहा है। **पतझर की सांझ** और **सुर नहीं सुरीले** के जिस प्राक्कथन में कवि ने स्वयं लिखा है, उनसे एक तथ्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि सिद्धेश्वर को हाइकू और **सेन्र्यू** में जो अंतर है, उसका उन्हें स्पष्ट ज्ञान है।

वास्तव में हाइकु की प्रारंभिक स्थिति की मूल प्रेरणा आध्यात्मिक थी, दूसरी स्थिति में प्रकृति रही (यद्यपि हाइकु प्रकृति काव्य कभी नहीं रहा), हाइकु की तीसरी स्थिति मनुष्य के कार्य व्यापार बनी। **'सेन्र्यू'** का संबंध अध्यात्म या प्रकृति से न होकर मनुष्य जीवन की वे विसंगतियाँ रहीं जिन्हें कवि ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया किन्तु बाद को धीरे-धीरे हाइकु और **'सेन्र्यू'** की मूल अवधारणाओं में परिवर्तन हुआ। **श्री ब्लीथ** के मत से हाइकु में कवित्व होता है और **'सेन्र्यू'** में हास्य-व्यंग्य। परन्तु अपने यहाँ हास्य भी अपने विभिन्न भेदों के समान एक प्रतिष्ठित रस के रूप में प्रस्थापित है। और शायद इसीलिए जापान के कई हाइकुकारों ने हाइकु के नाम से **'सेन्र्यू'** लिखे। भारत में यह भेद केवल सिद्धांत रूप में स्वीकार किया गया, रचनाधर्मिता में न के बराबर।

किसी भी पुस्तक की भूमिका में इतनी लम्बी पृष्ठभूमि नहीं होती परन्तु यहाँ मुझे यह आवश्यक प्रतीत हुई है। **'पतझर की सांझ'** और **'सुर नहीं सुरीले'**-दोनों ही संग्रहों में एक सी रचनाएँ हैं और इसलिए उन्हें

दो नाम नहीं दिए जा सकते। इनके कथ्यों के विषयों की परिधि काफी विस्तृत होते हुए भी मूलतः मनुष्य है। संसार में सभी विषयों के केंद्र में भी मनुष्य है। अध्यात्म, धर्म, प्रकृति, राजनीति, इतिहास, व्यापार, विज्ञान आदि के केन्द्र में भी मनुष्य ही है और साहित्य के केंद्र में भी। काव्य में भी और काव्य की एक विधा हाइकु में भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मनुष्य ही है।

सिद्धेश्वर एक कुशल कवि भी हैं और पारखी भी। इसलिए स्वाभाविक है कि उनकी रचनाओं में मानवीय कार्य-व्यापारों के विविध क्षेत्रों, स्थितियों और विशेषताओं के साथ उसकी दुर्बलताएँ भी अंकित हों। **'सुर नहीं सुरीले'** के विविध हाइकुओं के माध्यम से हम इस तथ्य को और भी स्पष्ट कर सकेंगे।

'सुर नहीं सुरीले' में इंसान से संबंधित एक सौ पाँच रचनाएँ हैं। मिर्ज़ा गालिब का एक शेर है-

बस कि मुश्किल है हर एक काम का आसाँ होना,
आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसां होना।

सिद्धेश्वर ने भी लिखा है-

1. **आसान नहीं / इंसान बन जाना / किसी युग में।**
2. **जीत हमेशा / होती इस जग में / इंसानियत।**
3. **फूलों की राह / काँटे बोती नहीं है / आदमियत।**
4. **इंसानियत / की बात आज यारों / कौन सुनेगा।**
5. **इंसान नहीं / जो बन पाता, वह / होता बेकार।**

प्रस्तुत संग्रह को कवि ने भीड़ के उन दधीचियों को समर्पित किया है जो सब स्थानों पर अपनी हड्डियाँ गलाते नजर आ रहे हैं। कारण स्पष्ट है। सिद्धेश्वर को आम आदमी से, उसकी सारी विडंबनाओं,

मजबूरियों, अभावों के साथ प्यार है। मौखिक नहीं, हार्दिक सहानुभूति है। वह स्वयं अपने को उसी भीड़ का एक अंश मानकर, सामने खड़ी समस्याओं से इसलिए जूझ रहा है, जिससे वह दूसरों की समस्यायें सुलझा सके। इसीलिए उसके हार्दिक उद्‌गार भी हैं-

1. **रोशनी करो/ जिसकी जिंदगी में/ अंधेरा दिखे।**
2. **नहीं होऊंगा/ अपनों से दूर/ हूँ भीड़ का जो।**

और आज का यथार्थ क्या है-

1. **मददगार/ नहीं आज आदमी/ आदमियों का।**
2. **लाखों हैं यहाँ/ पर मिलता कहाँ/ आदमी जहाँ।**

'इंसान' शीर्षक से लिखी रचनाओं में कवि ने बुद्ध और अरविंद को तो याद किया ही है, साथ ही, रेणु, माचवे, सरदार पटेल आदि पर स्वतंत्र हाइकु लिखे हैं और उड़ीसा की त्रासदी को लेकर भी अपने स्वर मुखरित किए हैं।

वस्तुविधान की दृष्टि से लें या भौगोलिक दृष्टि, जैसा कि मैं ऊपर संकेत कर चुका हूँ, सिद्धेश्वर के कथ्य का कैनवस काफी विस्तृत है। तसलीमा नसरीन से लेकर कारगिल तक। कवि की संवेदनाओं की मार्मिकता अनेक स्थलों पर जहाँ पाठक के अंतर्मन तक पहुँच जाती है, वहाँ एक उत्कृष्ट 'हाइकु' का प्रकाश झलमलाने लगता है। यथा-

1. **करें शिकवा/ अपने गरेवाँ में/ आस्था वही है।**
2. **छोड़ दिया है/ उन्होंने गोश्त खाना/ आस्था वही है।**
3. **बहुत सच/ जो हम देखते हैं/ सच नहीं है।**
4. **बाँधा है मुझे/ अपनी परिधि में/ गंध ने तेरी।**

और जहाँ सिद्धेश्वर का हृदय समाज की, व्यक्ति व्यवहार की, नियमों की, कुरूपताओं, स्वार्थ, हिंसा, भ्रष्टाचार आदि को देखकर घायल हो

उठता है, वहाँ दूसरी ओर स्वार्थ लिप्सा में डूबे नेताओं, समाज के, धर्म के, साहित्य के ठेकेदारों की भी कमी नहीं है। कवि सिद्धेश्वर ने उन सभी क्षेत्रों की अच्छाईयों एवं बुराइयों को अपने वस्तु विधान में समेटा है। कुछ तीक्ष्ण व्यंग्यों का आनंद लीजिए-

1. अब आदमी/ बेचता है प्यार को/ इस जहाँ में।

2. डूबेगा कल/ बुद्धिजीवी वर्ग भी/ तटस्थता से।

3. भूल चुके हैं/ रास्ता दिखानेवाले/ स्वयं ही रास्ता।

4. है कातिल भी/ आज वही, जो कल/ मसीहा मेरा।

5. महँगी हवा/ मिलने लगी अब/ इस देश में।

6. हत्या-रहस्य 'पुलिस के सिवाय/ कौन जानता।

7. सीता की पीड़ा/ क्या यह सच नहीं/ अग्नि परीक्षा।

8. बनी शराब/ मुसलमानों में भी/ है महबूब।

9. अनाज लाने/ गए थे, बैठ गए/ पीने शराब।

10. नारी है आज/ घर के द्वार पर/ परित्यक्ता ही।

सिद्धेश्वर के हाइकुओं में जीवन का यथार्थ भी है तो साथ ही मानवीय गरिमा भी, श्रृंगार के मधुरिमामय भी तो व्यंग्य के चुटीले छींटे भी। मेरा विश्वास है कि भौतिक जीवन से संबंधित हाइकु लिखते लिखते सिद्धेश्वर, प्रकृति की ओर और फिर अध्यात्म की जीवन की स्वाभाविक गति से, कालानुसार अवश्य ही अग्रसर होंगे। **'सुर नहीं सुरीले'** की रचनाओं में कवि ने 5/7/5 के वर्णक्रम का चुस्ती से पालन किया है। भाषा एकदम सरल और भाव सुबोध रखे हैं। और जैसा कि कवि ने स्वयं लिखा है इस संग्रह की रचनाएँ 'आज' के जीवन और उनकी समस्याओं, घटनाओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों से संबंधित हैं, इसलिए इनमें संप्रेषणीयता की प्रचुरता है। अपने कथ्य को सिद्धेश्वर ने अनेक स्थानों

पर पौराणिक मिथकों, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक प्रतीकों एवं बिंबों के माध्यमों से भी सक्षम एवं सटीक रूप में अभिव्यक्त किया है।

जैसा कि मैंने पहले भी संकेत किया है, सैद्धांतिक रूप में **'पतझर की सांझ'** की सभी रचनाएँ 'हाइकु' नहीं हैं और **'सुर नहीं सुरीले'** की सभी रचनाएँ 'सेन्र्यू' नहीं हैं। दोनों ही संग्रहों की अनेक रचनाओं में 'काव्यगुण' एवं जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है जो कि एक अच्छे हाइकुकार से अपेक्षित है और फिर जैसा कि मैंने पहले भी कहा है हिन्दी हीं नहीं, भारत की अन्य भाषाओं में यह तात्विक-सैद्धांतिक भेद स्वीकार ही नहीं किया गया है।

मैं श्री सिद्धेश्वर को उनके इस उत्कृष्ट संग्रह की रचनाओं के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और मुझे विश्वास है कि हिंदी के हाइकु जगत में उनके **'सुर नहीं सुरीले'** का हार्दिक स्वागत होगा।

भविष्य में कवि सिद्धेश्वर 'हाइकु' के राजमार्ग को और भी प्रशस्त करने का प्रयास करते रहेंगे, इस अपेक्षा के साथ!

396, सरस्वती नगर,
अहमदाबाद-380015 (गुजरात)

डॉ० भगवतशरण अग्रवाल
संपादक-'**हाइकु भारती**'

अनुक्रम

		पृष्ठ
1.	प्राक्कथन	4
2.	अभिमत	12
3.	सीधी सच्ची चोट करनेवाला संग्रह	17
4.	भूमिका	18
5.	इंसान	25
6.	बुद्धिजीवी	35
7.	समाज	39
8.	नारी	54
9.	तसलीमा नसरीन	63
10.	कवि तोमर	65
11.	धर्म	69
12.	लोकतंत्र	76
13.	राजनीति	81
14.	भ्रष्टाचार	94
15.	गाँव	97
16.	गरीबी	100
17.	किसान	104
18.	सरदार पटेल	106
19.	कारगिल	108

इंसान

इंसान वही
जीवन की सुगंध
औरों को भी दे

इंसान

इंसान वही
जीवन की सुगंध
औरों को भी दे

याद दिलाता
व्यक्ति का कृतित्व ही
उसे हमेशा

आसान नहीं
इंसान बन जाना
इस युग में

वही इंसान
जो समझे संतान
इस देश की

करते नहीं
वृक्ष लगाने वाले
योग फल का

बनाता अंधा
आदमी को आज भी
खुदगर्जी ही

चुकते नहीं
बेचने से देश को
नेता स्वार्थ में

होती हमेशा
व्यक्ति की पहचान
सक्रियता से

है बुरा नहीं
व्यक्ति का आदर भी
पर पूजा क्यों?

हैं बतलाते
आदर आदमी के
महानता ही

नहीं मिलूँगा
बंद कमरे में मैं
पूरी जिंदगी

होता निर्माण
स्वस्थ मानव-मूल्यों
से, समाज भी

नहीं होऊँगा
मैं अपनों से दूर
हूँ भीड़ का जो

योग्य आदमी
अपनी पहचान
स्वयं बनाता

खुद ढूँढ़ता
गंतव्य अपना
इंसान सदा

संवेदना ही
मनुष्य को इंसान
बनाए रखा

जीना चाहता
मरते दम तक
हर आदमी

है छाप छोड़ी
प्रभाकर माचवे
हर विधा में

कोई खुद को
हमेशा अकिंचन
नहीं कहता

मरता नहीं
करमचंद गाँधी
जैसा इंसान

है तरुणाई
जननी प्रतिभा की
हर हमेशा

रोशनी करो
जिसकी जिंदगी में
अंधेरा दिखे

करती नहीं
प्रतिभा इंतजार
कभी उम्र का

जागनेवाले
को जगाना इतना
आसान नहीं

मददगार
नहीं आज आदमी
आदमी का ही

इंसान आज
भयभीत हो रहा
परिवेश से

आपकी बात
कड़वी थी मगर
सच निकली

जीत हमेशा
होती इस जग में
इंसान की ही

अवश्य होंगे
आलोचक बेजुबां
राह अच्छी हो

थी अप्रतिम
जयप्रकाश जी की
चिंतन धारा

मिलता फल
कर्म के अनुसार
मनुष्य को भी

हो बीज जैसा
जीवन में कर्म जो
फल भी वैसा

थे सिरमौर
साहित्य सर्जकों के
शिल्पी 'रेणु' जी

करता जन
है संघर्ष सदा ही
रक्षा अपनी

हो गए आज
जन तमाम यहाँ
बहुरूपिए

कतरा जाते
हैं असलियत से
जागरूक भी

जिजीविषा ही
है सर्वोपरि चाह
जन-जन में

करते स्पष्ट
किसी व्यक्ति के कार्य
चरित्र को भी

चलता गया
क्योंकि मैं तो अपनी
ही धुन में था

लगाएं ऊर्जा
कोसने के बजाए
निर्माण में ही

बँटाया हाथ
सुख-दुख में मेरे
भुलाऊँ कैसे?

दें इजाजत
कहने की सच्चाई
कटु या मधु

देशवासियों
को करना है आज
आत्मचिंतन

खरी उतरी
था जिसे समझता
सफेद झूठ

बदल दिया
जीवन के रुख को
एक ठोकर

लाखों हैं यहाँ
पर मिलता कहाँ
आदमी कोई

कोई भी वर्ग
व्यवस्था के विरूद्ध
नहीं हो पाता

करता वार
पीछे से वह सदा
सामने नहीं

लोक-लाज पे
मर-मिटने ही को
पैदा हुआ मैं

इंसान आज
समस्याओं से घिरा
निराश यहाँ

मान मर्यादा
के सिवा बचा ही क्या
हमारे पास

साथ उनके
सच्चाई के पास जा
ढोंग से दूर

जकड़ा आज
जालों में इंसान है
बुरी तरह

दीप जलाओ
हरेक के घर में
और मुस्काओ

खाता आदमी
अपने आपको भी
भेड़िया बन

साधन-युक्त
हैं हम सब यहाँ
दरिद्र-मन

छला गया है
बार-बार देश में
आम आदमी

इंसान बने
बनकर हैवान
आज भी यहाँ

हर आदमी
भटकाव की ओर
तनाव से ही

धोखा खाना तो
आदत आदमी की
बन चुकी है

आपके कार्य
खुशियों से भर दें
मन-प्राण को

माँगते कैदी
जिंदगी के बदले
मौत की भीख

महरूम है
बुनियादी चीजों से
आम आदमी

नहीं कहते
तुम बुरे हो कुछ
संगति बुरी

है मोह माया
और भोग विलास
दुख-कारण

बनता नहीं
भाग्य से कोई बुद्ध
या अरविंद

भाग्य का होता
कुछ भी सार नहीं
यह जानिए

उनकी शोच
सार्थक व सुझाव
उपयोगी थे

सुख पाकर
खुश होना छोड़ दें
सलाह मेरी

चोर सतर्क
किंतु चुरा न सका
मेरा ईमान

कहा जाता है
भारत चिड़िया थी
कभी सोने की

फूलों की राह
काँटे बोती नहीं है
आदमीयत

दौड़ते हुए
भुला देते हैं हम
भले विचार

संभल सके
तो संभले कोई भी
मुझे गिरा के

प्रतिकूल था
माहौल, फिर भी वे
खरे निकले

सत्यकर्मी का
जीना होता पसीना
व तना सीना

कितना सूना
जन्म दिवस पर
आंगन मेरा

जीवन भर
अपमान का घूँट
हमने पिया

दरिया हम
हमको खुद रास्ता
मिल जाएगा

जरूरत है
स्वस्थ जनतंत्र की
इस देश में

भूलता नहीं
मैं दर्द दनुजों के
यह सच है

मुसाफिर हो
अनजानी डगर
चलो संभल

स्वाभिमान का
बीज क्षीण होते ही
हीन-भावना

शैतान होना
इंसान की अपेक्षा
बड़ा आसान

साफ-सुथरा
इंसानों को डगर
हर हमेशा

बदल गई
आज की हरीतिमा
पीलेपन में

इंसान नहीं
जो बन पाता, वह
होता बेकार

वासनाओं का
विसर्जन मैं करूँ
कामना यही

वज्रपात हो
उस पथ पे,
जहाँ कुकर्म चले

सच बोलूँ
जुबाँ कट जाएगी
मैं जानता था

उलझनों से
सिखाती है लड़ना
आत्मबल ही

खड़े होना है
हमें और आपको
मिलकर ही

इंसानियत
की बात आज यारो
कौन सुनेगा?

अट्टालिकाएँ
ढह तो सकती हैं
पर किससे?

सिखाती सदा
ठोकरें इंसान को
पथ किससे ?

आसमान को
सुबह ने सँवारा
इंसान किसे?

पहरेदार!
जो लोग जाग रहे
देखो उनको

अब आदमी
बेचता है प्यार को
इस जहाँ में

अंधेरा अभी
और गहरायेगा
जागते रहो

बुद्धिजीवी

डूबेगा कल
बुद्धिजीवी वर्ग भी
तटस्थता से

बुद्धिजीवी

भागते आज
दूसरी दुनिया में
बुद्धिजीवी भी

गद्धे विद्वान
ग्रंथ लाद करके
होते हैं कभी

प्रबुद्ध वर्ग
समाज सेवा नहीं
पेट पालन

है प्रभावित
बौद्धिक जीवन भी
युक्तिवाद से

पहचाना है
अपने समय के
सच को सदा

बुद्धिजीवी भी
अतिवादी दृष्टियों
के सहभागी

डूबेंगे कल
बुद्धिजीवी वर्ग भी
तटस्थता से

प्रबुद्ध जन
आज भी उदासीन
देश के प्रति

भूल चुके हैं
रास्ता दिखाने वाले
स्वयं ही रास्ता

बुद्धिजीवी ने
गंभीर विचार न
किया दंगे पे

सामने खड़ा
वैचारिक संकट
कुरेद रहा

एक प्रक्रिया
ज्ञान अर्जन की है
ज्ञान मीमांसा

खोते जा रहे
प्रबुद्ध भी अपनी
मान-मर्यादा

वह सत्य है
जो तत्व बुद्धि को भी
ग्राह्य होता है

हावी होती है
विज्ञान के विकास
में बैद्धिकता

दबोचती है
चील ही गौरेया को
खूनी पंजों से

मंजिल पाना
बिना कष्ट उठाए
आसान नहीं

जीवन होता
कितना है सुहाना
देख मुस्कारा

गले लगाओ
बिना भेदभाव के
ऊँच नीच का

यों ही वक्त को
बात टके की जान
कभी न खोना

एक सिक्के के
अपराधी-आतंकी
दो पहलू

पैनी निगाहें
दलित वोटों पर
सभी दलों की

भोले पांडव
चुपचाप रहेंगे
कब तकभी?

प्रबुद्ध जन
राष्ट्रीय दायित्व भी
निभाएँ आज

क्या धटनाएँ
झकझोरती नहीं
बुद्धिजीवी को

जो चेतन हैं
उनको जरूरत
नहीं है मेरी

प्रबुद्ध जन
वही जो स्वयं जगे
जगाए जन

जो चुप्पी साधे
प्रबुद्ध जन आज
वे चुप्पी तोड़ें

होते जो मृत
स्वीकारता उन्हें न
मैं बुद्धिजीवी

जो बुद्धिजीबी
सुप्त हैं, आज जागें
अपने-आप

जन-चेतना
जागाएँ, जनतंत्र
बचाएं आप

आ जाएगा ही
मधुमास यहाँ भी
खुशहाली का

करे रोशन
जो आज और कल
वही प्रबल

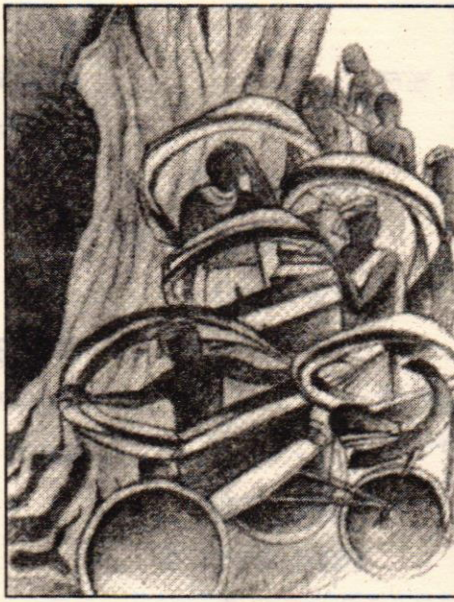

समाज

टूटने लगे
पारिवारिक रिश्ते
आज तेजी से

समाज

है कातिल भी
आज वही, जो कल
मसीहा मेरा

चाहते सभी
सामाजिक समता
बुलबुला-सी

क्यों पड़ जाती
पट्टी आँखों पर भी
दहेज-वक्त?

हैं कहाँ जाते
बिटिया की शादी में
जाति के लोग?

होता पूरक
रिश्ता पति-पत्नी के
परस्पर का

स्वस्थ समाज
स्वस्थ जनतंत्र से
ही बनता है

दें योगदान
समरस समाज
के निर्माण में

है धुरी होती
दांपत्य जीवन की
सेक्स व प्यार

आई जागृति
आज दलितों में भी
सदियों बाद

होता ओझल
दहेज के समय
जात पाँत भी

आती चांदनी
अंधेरे के बाद ही
क्यों घबड़ाते?

हों जिंदादिल
शुरू से अंत तक
पति व पत्नी

कुछ भी नहीं
अलावा थोथी बात
है जात पाँत

चाहिए नहीं
दुखों से घबड़ाना
हम सभी को

करें स्वीकार
मानकर चुनौती
सही ताने को

संभव नहीं
बिना अकुलाहट
गरलपान

असफलता
से सीखा, संभला
व आगे बढ़ा

होता संभव
कच्ची मिट्टी में ज्यादा
परिवर्तन

जिंदगी बस ही
उतार-चढ़ाव का
दूसरा नाम

लड़ाई आज
बदलाव की नहीं
हिस्सेदारी की

भाग्य नहीं
सफलता की कुंजी
आपके हाथ

कोशिश ही तो
पहली मंजिल है
कामयाबी की

करें शिकवा
अपने गरेबाँ में
झाँककर ही

चाहिए आज
समाज का निर्माण
नेक इंसान

सिमटे लोग
आज हैं सिसकते
अपने आप

संभलो, पर
गिराकर दूसरों
को, कभी नहीं

है खड़ा आज
टूट के कगार पे
समाज यहाँ

अपने आप
में सिमट रहे हैं
लोग आज भी

होती है खुशी
देखकर सेवा में
नि:स्वार्थ भाव

गंध खून की
जो दंगों से निकली
सांसों में आज

स्वयं को देखें
कहने के पहले
किसी अन्य को

टूटने लगे
पारिवारिक रिश्ते
आज तेजी से

न अपराधी
जो समाज में आज
दोषी करार

प्रतिबद्ध हों
कर्तव्य पालन के
आप स्वयं भी

जरूरत है
छोटे परिवार की
आज देश को

है देखा जाता
हृदयहीन समाज
आज भी यहां

हिंसा न की हो
जो जीवन में कभी
काफिर आज

कर्तव्य - बीच
बाधा आसक्ति ही है
पारिवारिक

बराबरी की
अमीर-गरीब की
दौड़ है नहीं

हुक्मरान ही
प्रभावित करते
नैतिकता को

असंतोष ही
कारण विनाश का
है जीवन में

बुद्धि से सदा
होता है मार्गदर्शन
समाज का भी

देती नहीं है
विद्रोह की भावना
सुनाई आज

होता पीड़ित
टूटती रूढ़ियों से
समाज आज

होता शिकार
निष्क्रिय समाज ही
षड्यंत्रों का

होगा बर्बाद
हमारा समाज भी
भौंड़े फिल्म से

जलता आज
जातीय तपिश में
सारा समाज

नष्ट-भ्रष्ट भी
नपुंसक समाज की
होता हमेशा

है हिंसा और
खुदगर्जी का रास्ता
पतन का ही

तोड़ देती हैं
सारे बंधनों को भी
ज्यादा खुशियाँ

जूझ रही है
नई उलझनों से
जनता आज

है जल रहा
आज हिंसा की आग
पूरा संसार

बदल रही
मनोरंजन-दृष्टि
समाज की भी

तरस रहा
कबसे मेरा मन
बदलाव को

समाज में हो
सम सद्भाव से
परिवर्तन

छोड़ दिया है
उन्होंने गोश्त खाना
शगल वही

मशाल जले
सामाजिक क्रांति की
देश में आज

संबंध-बीच
उभरती दरार
त्रासदी आज!

जिंदा मिसाल
हैं जेलें बिहार की
यातनाओं में

महंगी हवा
मिलने लगी अब
इस देश में

आदमी आज
आदमी को खा रहा
कैसा नजारा

जरूरी आज
करना मुकाबला
जातिवाद से

शोषण-मुक्त
मानव समाज हो
एक सपना

नीचे की ओर
चलती है व्यवस्था
नियम यही

कमजोर है
रूढ़िवादी विचारों
से समाज भी

दीवार खड़ी
जड़ को घेरकर
हमारे आगे

चुकते नहीं
अमृत पयोधर
किसी भी माँ के

होता नहीं है
उन्हें अपने आप
पर भरोसा

कभी न छोड़ा
सामाजिक काम का
व्रत हमने

कलाकारों के
अनुराग व द्वेष
समाज के हैं

महापुरुष
किसी के इशारे पे
नाचते नहीं

हत्या-रहस्य
पुलिस के सिवाय
कौन जानता?

स्कूली बच्चों के
बस्ते पुस्तक भरे
हैं बोझ बने

जातिविहीन
समाज की स्थापना
मात्र कल्पना

हवा का रुख
उनके इशारे से
बिगड़ता है

मैं समाज का
जहर पीता रहा
शंकर बन

टिकता नहीं
झूठ जमीन पर
पैर के बिना

बहुत सच
जो हम देखते हैं
सच नहीं है

करोड़पति
दे हजार, पर माँ
कहीं उदार

फैला है आज
विषमता का जाल
हर समाज

लगे हैं लोग
झूठ के सहारे ही
सच-प्राप्ति में

त्याग किया है
माँ, करोड़ों का धन
हमें दिया है

बाँधा है मुझे
अपनी परिधि में
तेरी गंध ने

निगल जाता
झूठ सच को सदा
सही मानिए

अंधेरे से ही
उमड़ पड़ा प्यार
पाया संसार

सर्दी व गर्मी
बाँटता अखबार
पेट खातिर

जात-पांत से
सभी धर्म आज
ग्रस्त दिखता

निशाना होता
फूलों भरा बगीचा
इस युग में

द्रुत गति से
आबादी बढ़ रही
इस देश की

फैल चुकी है
समता की भावना
आज सर्वत्र

गुजरता है
जो व्यक्ति संघर्ष से
सदय होता

सदय बनाते
संघर्ष मनुष्य को
समाज के ही

जनता आज
अधिकारों के प्रति
सजग भी है

वर्ग-संघर्ष
पूंजीवादी व्यवस्था
का प्रतिफल

लौटा था घर
दस्तक दी किसी ने
दरवाजे पे

युग-युग से
शोषण से मुक्ति का
प्रयास जारी

करना होगा
मानव को निर्मित
नव समाज

देखा-परखा
व्यक्तित्व व कृतित्व
कायल हुआ

लद गया है
साम्राज्यवाद-युग
आज यहाँ भी

जरूरत है
समाज-निर्माण में
सहयोगी की

मर रही हैं
आस्थाएँ आदमी की
हर हमेशा

हर आदमी
पशुता की मार से
घायल यहाँ

जनशक्ति का
संगठन करना
आज जरूरी

करते लोग
शराब के सहारे
जुर्म बड़े ही

उमड़ रही
बदले की भावना
हर जन में

दो वर्ग बने
आज यथार्थवाद
आदर्शवाद

सुरीले नहीं
आज इस देश में
हमारे सुर

बदलाव हो
हरेक आदमी में
भीतर से ही

नहीं होती है
पुनः निर्मित कभी
नैतिकता भी

है गिर गया
अपनी ही नजरों
सुरा के साथी

जाता निगल
दिवाला अक्ल का ही
संगत-सुरा

हम दूर हैं
किंतु तुम्हारा नाम
मेरे दिल में

बनी शराब
मुसलमानों में भी
है महबूब

अनाज लाने
गए थे, बैठ गए
पीने शराब

देखे तमाशा
रख जिंदा मछली
तपती रेत

बूढ़े हैं पिता
चंद दिनों के लिए
मेहमान-से

करे शराब
बहुतों को खराब
सुना जनाब?

रोना आ गया
बिना हाथवाले को
अँगूठी देख

जब-जब भी
प्यास लिए भटका
अधर मिले

जुकाम तो क्या
जागीर चली जाएगी
पीने से सुरा

दोस्त जासूस
विश्वास का संकट
इस सदी में

फोन सुविधा
अपनों से दूरियाँ
मिलना कम

भीड़ के हम
आदमी, मत खोजो
बंद कमरे

रिश्ता जोड़ ले
गैर के गम से तू
देख खुशियाँ

क्यों खामोश वो
जो कल हंसते थे
बेबसी पे ही

न होते दूर
अपनों से कभी भी
भीड़ में हम

नदी क्या जाने
समुद्र डुबो देगा
उसे बाहों ले

खामोशी तोड़ें
कहो दास्ताँ दोस्तों को
टूटे दिलों की

मत खोजना
तू हमें कमरे में
भीड़ का हूँ जो

घर सेठ का
हवादार भले हो
दिल तंग है

गले मिला के
दिन मस्ती का जी लें
दर्द भुला के

समाज गर
गूँगा, कान पकड़ो
संभलकर

आज आदमी
कितना खूँखार है
उसूलों पर

कहाँ खो गयी
भारतीय समाज की
सहिष्णुता भी

हो गई लुप्त
हमारे समाज की
संवेदनाएँ

हर आदमी
जुटा जुल्म के लिए
मौका पाते ही

खोये हमने
जमाने के साथ ही
अपने स्वप्न

समाज ग्रस्त
है धार्मिक ढोंग से
हमारे यहाँ

क्यों डर रहा
आदमी से रास्ता भी
आज जहाँ में?

कहाँ से चलें
हजार साल बाद
कहां पहुंचे

न पसीजता
मानव-मन, मृत्यु
देखकर भी

एक क्षण थी
सुनहली धूप-सी
मेरी जिंदगी

भरी थी जेबें
जिनकी वो खुशियाँ
लेकर चले

न करने दें
मनमानी धनी को
मुट्ठी भर जो

होता निर्माण
स्वस्थ मानव-मूल्यों
से, समाज भी

हावी रहता
क्रोध पर सदैव
समता-भाव

तन का रोग
छूट जाता है, पर
मन का नहीं

होता सदैव
स्मृतियों का संग्रह
मानव-मन

भटक रहे
बेकारी के कारण
शिक्षित वर्ग

शक्ति उधर
झूठा, जालसाज व
धूर्त जिधर

होना है खरा
वक्त की कसौटी पे
हर व्यक्ति को

है रसा बसा
हर व्यक्ति-मन में
समता-भाव

जलती रही
धधकती आग से
इंसानियत

सहमी रही
गाँधी जी की अहिंसा
बदहवास

पशु बनाती
मानव समाज को
विकृतियाँ ही

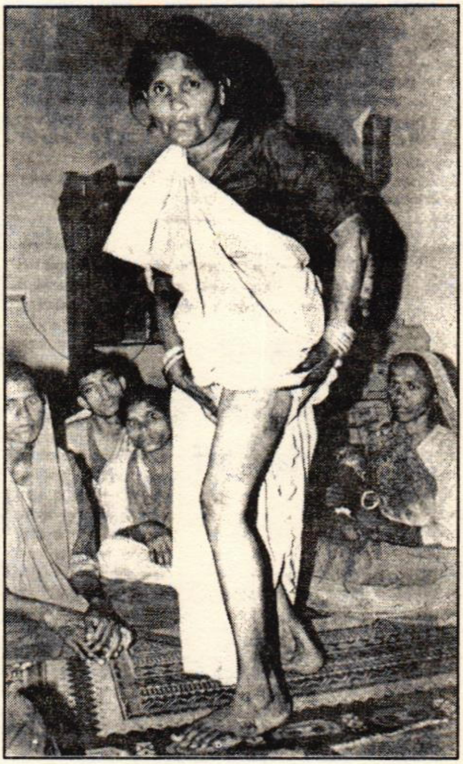

नारी

रहकर भी
दुख में तलाशती
सुख ही नारी

नारी

रहकर भी
दुख में तलाशती
सुख ही नारी

है चल रहा
स्वत्व, सम्मान के लिए
नारी–संघर्ष

मौन नारियाँ
अब नहीं सहेंगी
थामें मशाल

सदियों से ही
विषमता की मारी
नारी बेचारी

आधी आबादी
आज सिसक रही
कैद घरों में

सहे न नारी
मुक्त हो मुस्कानों से
यातना अब

हर चुनौती
स्वीकार करेगी स्त्री
संघर्ष से ही

कराह रही
औरत की कहानी
सभी घरों में

जब भी नारी
खामोशी को तोड़ेगी
तो होगी क्रांति

है चल पड़ी
क्रांति की राह पर
नारी आज की

आग लगेगी
औरत का अगर
सम्मान जगे

हैं कराहती
हक के लिए आज
महिलाएँ भी

समाज डसा
फन उठाकर ही
नारी को सदा

नारियाँ अब
कबतक जलेंगी
दहेज-अग्नि?

नारी की व्यथा
शोषण, उत्पीड़न
भला और क्या?

जानती नारी
डस लेगा कभी भी
समाज उसे

सोचती वामा
गुलामी मर्दों की ही
रात-व-रात

अत्याचार ही
नारी के जीवन में
हा! यही बदा

बढ़ती संख्या
परित्यक्ता नारी की
है चिंतनीय

पिसती स्त्री
हर पायदान पे
इस देश में

कब जगेगी?
अपमान सहती
आज की नारी

अर्द्धांगिनी भी
है आधा भाग नहीं
आज नारियाँ

घर बसाने		खत्म हो गया
के टूटते सपने		एक वर्षीय पर्व
रोज नारी के		महिलाओं का
	है जन्म देती	
	कल्पना, नारी जब	
	देह छिपाती	
वामा की आज		गुजर जाती
हैं आह भरी रातें		आठ मार्च आकर
गर्दिश-दिन		हर बार यूँ
	है शर्मनाक	
	दहेज के कारण	
	वर के कार्य	
बहु विवाह		शुरू हो जाता
महिलाओं के लिए		स्त्रियों का अत्याचार
है अभिशाप		जन्म के पूर्व
	है क्यों न लेती?	
	खिलते गुलाब से	
	सीख नारी	
खतरा आज		कुछ होता है
नारी की अस्मिता को		लेती है अँगड़ाई
अपसंस्कृति		नारी जब भी

कर सकती
मिलने पर मौका
कुछ भी नारी

कैद नारियाँ
बाह्य अनुभूतियों
से हैं वंचित

है सार्थकता
नारियों की अधिक
मातृत्व में ही

जिस्मफरोशी
आज आई सरक
कीचन तक

बिताती आज
अधिक लड़कियाँ
घुटन-दिन

कैसे कटती
पहाड़-सी जिंदगी
विधवाओं की?

ले जाना होगा
नारी आंदोलन को
मुक्ति के लिए

नारी के लिए
परिवर्तन जरूरी
नियमों में भी

मिटाता फर्क
मुर्गा व औरत का
तंदूरकांड

है कोई नहीं
पोछनेवाला आँसू
विधवाओं के

नारियों का भी
नर के विकास में
है योगदान

नारियाँ आज
बना दी गयीं मात्र
घर की शोभा

बढ़ती रोज
समस्याएँ नारी की
आजादी बाद

दहेज हत्या
समाचार आज का
अति दुखद

होती आज भी
भारतीय नारी की
अवहेलना

निर्भर होता
पत्नी के स्वभाव पर
सुख पति का

पैठी हुई हैं
जड़ें दहेज की भी
बड़ी गहरी

करना होगा
संघर्ष नारियों को
मुक्ति के लिए

देशव्यापी है
समस्या दहेज की
यहाँ आज भी

बढ़ाती उम्र
वैवाहिक पद्धति
दहेज की भी

होता सरल
नारी जहाँ
फूट फैलाना

आदि शक्ति ही
नारी सृष्टि की सदा
इस देश में

है घट रही
मर्यादा नर-नारी की
तलाक से भी

करुणा गाथा
अत्याचार नारी की
नारी-दासता

नारी न आज
व्यथित, उपेक्षित
दया की पात्र

दोषी पुरुष
महिला कभी नहीं
बलात्कार में

नारी है आज
घर के द्वार पर
परित्यक्ता ही

स्वर्ग को भी, हाँ
ठुकराया जा सके
वक्षस्थ नारी

लगाव होता
आधार नर-नारी
दुराव नहीं

सहना पड़ा
अपमान नारी को
इस काल में

त्यागा राम ने
धोबी के ताने पर
साध्वी सीता को

है देती जन्म
मर्दों को सदा नारी
यही कहानी

खिलौना आज
पुरुष के हाथ का
है हर नारी

अपराध है
नारी का अनादर
आचरण में

हल्की आहट
नवेली दुल्हन की
गंहती मन

घटना घटी
महिलाओं के साथ
कहानी नहीं

चार शादियाँ
ज्यादती का लबादा
है पुरुषों का

खोने की चाह
लेकर आती पत्नी
पति के पास

जरूरी आज
आँसू पोछना अभी
विधवाओं के

बेहयाई है
पीटना पशुवत्
महिलाओं को

सहती नारी
जेठ की नदियों-सा
विरह-दर्द

भर देती हैं
तमाम खुशियों से
अच्छी नारियाँ

है जुर्म बड़ा
शादी लड़कियों की
छोटी उम्र में

जीना दूभर
गर पत्नी आपकी
बददिमाग

माँ बनना ही
सबसे बड़ी इच्छा
होती नारी की

एक औरत
सभी पहेलियों को
छिपाए हुए

हाशिए पर
आज भी महिलाएँ
राजनीति में

हक नहीं है
मार्ग चुनने का भी
आज नारी को

नारी की पीड़ा
जिसने है समझा
है तसलीमा

क्यों बन जाता
अंधा, पुरुषवाला
यह समाज

हो रहा आज
भयावह शोषण
महिलाओं का

नहीं होता है
नारी की कोई बात
मर्द से परे

महिलाओं को
कुछ नसीब नहीं
नारी पर्व में

किस साँचे में
देश की आजादी को
ढाला लोगों ने

रही खेलती
यथार्थ की पोल भी
तसलीमा ही

तसलीमा नसरीन

नारी की पीड़ा
जिसने महसूसा
है तसलीमा

तसलीमा नसरीन

है बन गयी
पहचान नारी की
त० नसरीन

नारी की पीड़ा
जिसने महसूसा
है तसलीमा

नारी मुक्ति का
है संजोया सपना
त० नसरीन

रही खोलती
यथार्थ की पोल भी
तसलीमा ही

तसलीमा ही
नारी की अस्मिता को
बचा पाएगी

है तसलीमा
डाक्टर, लेखिका व
नारी प्रवक्ता

दिखाएगी ही
क्रांति की ज्वाला बन
त० नसरीन

तसलीमा भी
घर के दरवाजे
परित्यक्ता ही

बांग्ला देश की
प्रसिद्ध स्तंभकार
त० नसरीन

है तसलीमा
मयमन सिंह की
सुगंध-माटी

करना होगा
नारियों को संघर्ष
तसलीमा-सा

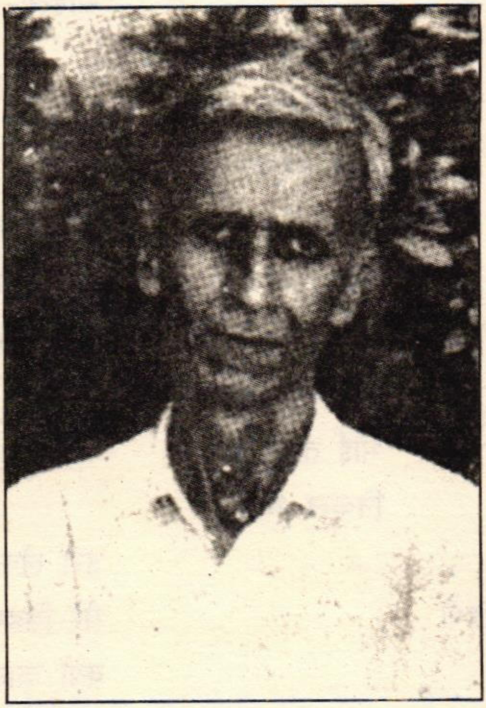

कवि तोमर

यादों में यादें
स्मृति है तोमर की
आज केवल!

यादों में यादें
स्मृति है तोमर की
आज केवल!

हो अभियंता
कवि तोमर ने की
सहित्य-सेवा

था कवि भोला
खरा खोटा कहना
भाव उसका

सब कायल
स्मरण शक्ति के भी
तोमर जी की

भाई तोमर
को कहती दुनिया
नेक आदमी!

जब भी चाहा
भाई तोमर जी ने
निकल भागा

उसने काटी
अपनी ही जिंदगी
सौ जतन से

उसे लेकर
मेरे विहग पंख
क्यों काट डाले?

क्यों राक लिए
मेरे होठों के गीत
जो मन भाए

लौटा दो उसे
गर हो मुमकिन
अर्ज है मेरी

उसके बिना
कविता विहीन मैं
आज हो गया

संगीत बिना
अब मेरा आँगन
आज है सूना

ओ दयानिधि
तोमर–छीनकर
क्या तुझे मिला?

मेरी आँखों में
आसूँ की बूँदे भरी
जो भोर उठे

जहाँ जीवन
मेरा ठहर गया
तू भाग चले

शक्ति मुझमें,
जो तुमने भर दी
कहाँ है वह?

मेरी आँखों में
झांककर देखो तू
गहरी पीड़ा

स्नेह होता है
कितना अनमोल
जाना है मैंने

क्यों छोड़ दिया
तूने मुझे तैरते
मझधार में?

कृपा करो तू
तपते आँगन में
थोड़ी वर्षा दो

है गँध नहीं
हमरी बगिया के
किसी फूल में

मिलता कोई
आनंद नहीं अब
कवि–गोष्ठी में

दे पाती नहीं
वह शीतलता भी
तरू की छाया

काश! आज भी
वह उन्मुक्त हँसी
मैं सुन पाता!

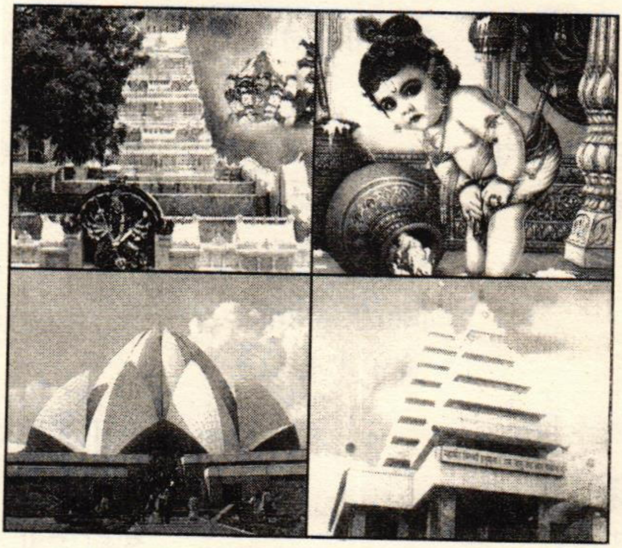

धर्म

दिखाता धर्म
स्वर्ग का स्वर्ण द्वार
मौत के बाद

धर्म

है दोष नहीं
धर्म की बड़ाई में
पर क्यों निंदा?

कभी न देखा
जन-समस्याओं को
धर्मवालों ने

दिखाता धर्म
स्वर्ग का स्वर्ण द्वार
मौत के बाद

पाखंड की जो
करते आलोचना
खुद शिकार

है बिक रहे
धर्म की दुकानों में
कोरे सपने

हर धर्म में
ऊपर की नजर
से सब एक

धर्म का धंधा
सब काला ही काला
है माफिया का

बताता धर्म
आज नहीं तो कल
वे अच्छे होंगे!

है पैसा माया
सब धर्म कहता
ऐंठता धन

प्रश्रय देता
धर्मों का छोटा वर्ग
स्वार्थी तत्त्वों का

हैं डर रहे
पोल खोलने वाले
से, धर्मवाले

सरकारें भी
बनती बिगड़ती
धर्म-सहारे

डरी जनता
व्यवस्था से भी
ब्राह्मणवादी

चोट करना
है ठीक बात नहीं
मान्यता पर

होगा गलत
धज्जियाँ उड़ाना भी
किसी धर्म की

खड़े दिखते
ठेकेदार धर्म के
सत्ता के पास

न कोई धर्म
मानव धर्म से जो
बढ़कर हो !

चोट करना
है तारीफ की बात
बुराई पर

अंधविश्वास
धार्मिक संगठनों
में भरे पड़े

धर्म-व्यापार
फल-फूल रहा है
संरक्षण से

अंधविश्वास
सामाजिक बुराई
इसे जानिए

है दुखी ज्यादा
फँसी है जो जनता
धर्म कर्म में

सच मानिए
धर्मकर्म का धंधा
गरीबी-फंदा

सिखाया जाता
साधना की आड़ में
पलायन ही

शुरू हुआ है
कट्टर धार्मिकता
का नया दौर

समझ रही
धर्म का यह खेल
आम जनता

दिया जाता है
निठल्ले साधुओं को
आदर आज

भोली जनता
को धर्म-ठेकेदार
भरमा रहे

सिखाया हमें
आज नहीं तो कल
कर्मों का फल

गद्दी में मूर्ति
है आधे कपड़े में
पर मनुष्य ?

उचित नहीं
आलोचना करना
अन्य धर्मों की

होता जर्जर
हर समाज आज
धर्मनीति से

न बनें कभी
फकीर लकीर के
बिना सोचे ही

है होता ह्रास
हमारे विवेक का
धर्म से सदा

कहा कबीर
है तंत्र मंत्र झूठ
भरमों मत

निदंनीय है
तुच्छ संकुचितता
कुछ पंथों की

लिया समेट
मिथ्या के घेरे में भी
पुरोहितों ने

करें होकर
निर्लिप्त सब काम
सूक्ति गीता की

कमजोर है
कच्चा धागा धर्म का
हमारे यहाँ

त्रस्त समाज
पुरोहित-प्रपंच
व यातना से

अभाव नहीं
धर्म-ठेकेदारों में
अज्ञानता का

जन जीवन
है त्रस्त भारत में
तंत्र-मंत्र से

धर्म व्यवस्था
धर्म-ठेकेदारों से
बरकरार

कैद रहे हैं
धर्म की कोठरी में
वर्षों से हम

देखा किसी ने
स्वर्ग व नरक को
आज तक भी ?

देश बचेगा
तब हमारा धर्म
और हम भी

है अच्छा नहीं
हिंदुओं को कोसना
पूर्वाग्रह से

रहते सदा
हैं सशक्त मनुष्य
धर्म से दूर

कमजोर है
रूढ़िवादी विचारों
से, हिंदू-धर्म

भाग्य ने कहा
जिसने चोंच दी है
चुग्गी भी देगा

है खुली छूट
खाने की हराम का
कर्मकांडी को

विद्यमान है
ऊँच-नीच-भावना
सभी धर्मों में

है जहरीली
धार्मिक कट्टरता
जातीयता-सी

सरल नहीं
है नास्तिक होना भी
इस देश में

पवित्र होती
सर्वदा ही भावना
भक्ति-भाव की

हैं जो अनन्त
वे ही हैं मेरे अन्त
आप जानिए

खूँटे से बंधी
हमारी मान्यताएँ
सीधी गाय-सी

तेज चाकू से
धर्म का उत्सव हो
कैसा जमाना

जातियाँ, धर्म
सब डँस रहे हैं
इस देश को

अंधविश्वास
नई सहस्राब्दी की
है एक बेड़ी

नफरत ही
जिसके दिल में हो
क्या देगा और?

धर्मानुसार
आचरण करना
आपका कर्म

हठधर्मिता
सभी धर्मों के लिए
खतरनाक

इस सृष्टि के
सभी धर्म शांति का
संदेश देता

हवा दी जाती
मंदिर-मस्जिद के
प्रकरण को

कट्टरपंथी
की हार निश्चित ही
आज नकल

लोकतंत्र

है लोकतंत्र
दर्दनाक मोड़ पर
आज हमारा

लोकतंत्र

हवा दी जाती
है लोकतंत्र
दर्दनाक मोड़ पर
आज हमारा

कट्टरपंथी
कैसे बढ़ेगा
हो नेता ही लुटेरा
देश हमारा

लोकतंत्र ही
आज है मूल आत्मा
भारत की भी

है कोई नहीं
ऊपर कानून से
जनतंत्र में

लोकतंत्र में
संसदीय चुनाव
पावन नाव

समाजवादी
की तोड़क प्रवुत्ति
जग-जाहिर

उभर रही
हैं क्षेत्रीय पार्टियाँ
इस देश में

कुतर रहे
लोकतंत्र की जड़ें
नेता ही आज

आज जरूरी
जनतंत्र के लिए
वोट देना भी

सवाल आज
लोकतंत्र के मूल्य को
बचाने का है

हम जी रहे
एक लोकतंत्र में
सजीवता से

हुआ है जन्म
वैशाली की भूमि में
लोकतंत्र का

आजादी बाद
भोली-भाली जनता
ही मारी गई

कम हो रही
संसदीय गरिमा
इस देश में

है लोकतंत्र
भारत, संसार में
सबसे बड़ा

संघर्ष किया
अंग्रेजों के खिलाफ
पर क्या पाया?

लोकतंत्र का
पोषक माना जाता
है चुनाव भी

चरमराता
मूल्यहीनता से भी
लोकतंत्र है

तंग आ गयी
खिचड़ी शासन से
जनता आज़

कब्र पर है
लोकतंत्र की नींव
इस देश में

है ठीक नहीं
लोकतंत्र-सेहत
गुटबाजी से

रोकना होगा
लोकतंत्र के लिए
दलबदल

प्रजातंत्र
चादर ओढ़े खड़ा
जंगल राज

पहन लिया
है सामंती लिबास
प्रजातंत्र ने

पीसी जा रही
आजादी की चक्की में
जनता यहाँ

कहाँ खड़ा है
पचास साल बाद
देश हमारा

सच कहूँ, तो
कहाँ उतरती है
बात गले में

रास न आता
कभी भी धर्मतंत्र
लोकतंत्र को

हर शाख पे
उल्लू बैठा है यहाँ
क्या कहने हैं?

समाजवाद
धूर्तों का शब्द-जाल
बन गया है

लोकतंत्र में
महत्त्वपूर्ण होता
मतदाता ही

आमजनता
पहचानती रही
रहबर को

नेता का तीर्थ
गंगा-सागर नहीं
लोकसभा है

कितनी नींदें
जिन्हें पाने में खो दी
खोटे निकले

महत्वपूर्ण
भूमिका विपक्ष की
लोकतंत्र में

कहाँ बनी है
भारत की जनता
नागरिक भी?

लोकतंत्र की
ताकत जनाकांक्षा
से जुड़ना ही

खत्म हो रहीं
सारी मर्यादाएँ भी
सत्ता-प्राप्ति में

टूटने लगे
आम जन के स्वप्न
लोकतंत्र में

विचार धारा
शाब्दिक प्रचार से
स्वीकृत नहीं

दलबदल
लोकतंत्र के लिए
खतरनाक

राष्ट्र निर्माण
में स्व कर्तव्य को ही
अर्पित करें

सोचना होगा
हम देश के लिए
क्या कुछ करें

प्रतिनिधि भी
जबावदेह नहीं
जन के प्रति

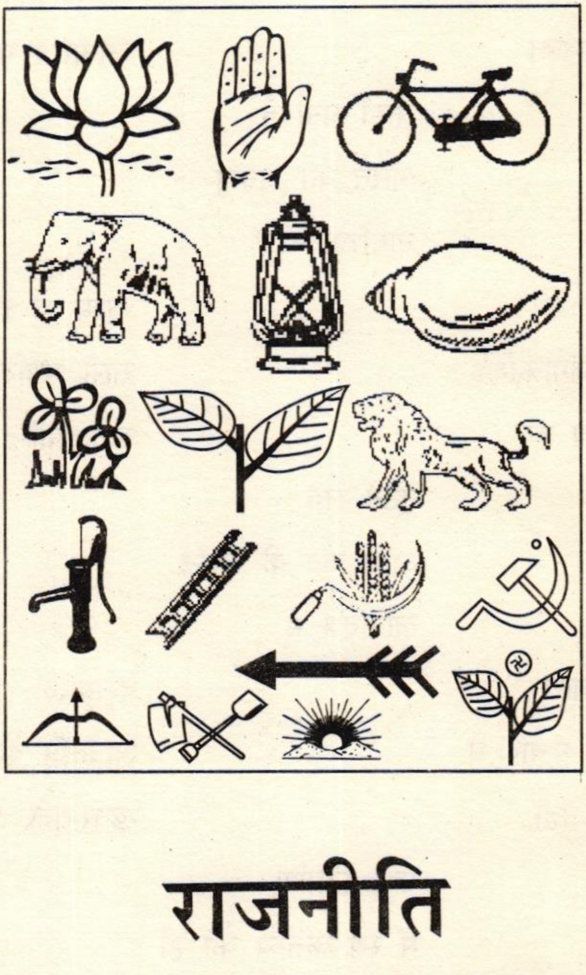

राजनीति

थे ढूँढ़ रहे
नेताजी नैतिकता
राजनीति में

राजनीति

लेकर आती
अपनी ही संस्कृति
राजनीति भी

है व्याप्त आज
माहौल दरबारी
राजनीति में

हो चुका भंग
मोह जनता का भी
सभी दलों से

भरता आज
है राजनेता हर
अपना घर

है कोई नहीं
पीछे चलने वाला

नोचते नेता
सूखी आँत दीनों की
भेड़ियों-सा ही

है आचरण
प्रतिनिधियों के भी
प्रभावहीन

नेता से मिलें
हो पाना ही केवल
आश्वासन तो

होती दीवारें
सभी दलों के दावे
हवाई किला

राजनीति का
मौजूदा है माहौल
दलदल का

राजनीति के
धुरंधर खिलाड़ी
सभी दलों में

ढूँढ़ना आज
हो रहा है मुश्किल
बेदाग नेता

अंतर्कलह
आज सभी पार्टियों
में दिख रहा

कर सकते
पाने के लिए सत्ता
कुछ भी नेता

हैं बदलते
गिरगिट-सा रंग
आज के नेता

थे ढूँढ़ रहे
नेता जी नैतिकता
राजनीति में

बुझते हुए
राजनीतिक दियों में
में तेल डालें

राजनीति से
जनता की वितृष्णा
चिंताजनक

हैं पाते रोज
कोर्ट की फटकार
सत्ता के लोग

न कोई दल
पाया था बहुमत
अपने बल

ठाटबाट के
आदी नेता जेलों में
सीलन-भरी

एकधिकार
आज सभी दलों में
स्पष्ट दिखता

कुछ राज्यों में
वजूद नेताओं का
सिमट रहा

कहाँ सूखती
धारा अपराध की
राजनीति में?

रेंगती न जूँ
हैं आज कानों पर
हुक्मरानों के

है बेखबर
विधायिका भी आज
मुसीबतों से

कहाँ मिलता
जमीन का आदमी
राजनीति में?

हैं भुना रहे
नाम अंबेदकर
सभी पार्टियाँ

है चिंता नहीं
सरकार, नेता को
मतदाता की

दिखाई देती
मर्यादा-विहीनता
राजनीति में

हैं नेता आगे
पंडे, पादरियों से
ठगी में आज

इशारे पर
जनता मर रही
राजनेता के

आज दीखती
है चरित्र-हीनता
नेतृत्व में ही

सर जितने
सरदर्द उतने
सरकार में

आज के नेता
गणेश परिक्रमा
में पारंगत

हो सकता है
सुखी परिवार भी
नेताओं का ही

जन सेवा है
राजनीति से दूर
हमारे यहाँ

कैसे बचेगा
पाखंडी नेताओं से
भारत देश

मुश्किल होगा
फणों से बच पाना
राजनीति के

पल में दोस्त
हैं पल में दुश्मन
राजनीति में!

तलाश आज
राष्ट्रीय विकल्प की
इस देश में

मत देखो यूँ
मुझे पलट कर
है रखा ही क्या

चाटूकारिता
पर ही टिकी आज
की राजनीति

है जरूरत
विकल्प शक्तिशाली
इस राष्ट्र में

शोचनीय है
राजनीतिक दशा
इस देश की

हो रही विदा
नैतिकता भी आज
राजनीति से

है ठुकराया
संकीर्ण नीतियों को
मतदाता ने

तानाशाही भी
संकट टालने का
एक तरीका

आज हो गया
विद्रूप, कलुषित
राजनीति भी

हैं पनपते
ज्यादा राजनीति में
अधकचरे

नित्य लगते
नेताओं के दामन
में दाग आज

चाहता नहीं
आज कोई हटना
राजनति से

हलचल थी
परस्पर विरोधी
कुर्सी के लिए

जरूरत है
आर्थिक विकास की
इस देश को

जाता हटाया
धक्के मारकर ही
राजनीति से

चोली दामन
का संबंध, दौलत
और सत्ता का

जीत के बाद
उम्मीद सांसदों से
न करें ज्यादा

कैसे बचेंगी
औरतें तंदूरों से
राजनीति में

देश की सेवा
बदल गयी आज
खाने में मेवा

जो करना हो
समूह के लिए ही
करें सांसद

बेखबर हैं
देश की समस्याओं से
नेता हमारे

दब गई हैं
जनता की जरूरतें
सत्ता के नीचे

दी है चुनौती
सदा बागियों ने ही
कांग्रेस को भी

नहीं कानून
लागू हो स्वयं पर
नेता का स्वर

असुरक्षित
आज भी महिलाएँ
राजनीति में

है कमी आज
नैतिक संस्कारों की
सभी दलों में

बदल रहे
हैं आज नेता दल
जैसे कमीज

उपज रहीं
सीजनल पार्टियाँ
निज सिद्धांत

दफना दिया
सभी दलों ने आज
निज सिद्धांत

आज है छाया
सितारों का भी साया
राजनीति में

होगा विरोध
भाजपा का जितना
वह बढ़ेगी

जरूरत है
साझा सरकार की
हिंदुस्तान में

सीने-सितारे
हैं प्रचुर मात्रा में
सभी दलों में

नीतियों के ही
हों प्रतिबद्ध सदा
नेता के नहीं

ग्रस्त आज हैं
राजनीतिक दल
तुच्छ स्वांग से

गरीबी मिटी
नहीं तब बचेगा
दलों का मुद्दा

दिवा स्वप्न ही
देखते युवा आज
नेतागिरी का

बना देती है
दोस्त दुश्मन को भी
राजनीति ही

खेल असल
सत्ता हथियाने का
चाहे जैसे हो

कुर्सी की भूखी
अनार के दानों-सी
बिखरी पार्टी

कोसों दूर है
जनहित व सेवा
राजनीति से

खुशखबरी
गिर रहे स्तर से
नेता चिंतित

तुले हुए हैं
बर्बाद करने को
आज के नेता

अवधारणा
लोक कल्याणकारी
कर्म पाखंडी

कर रहे हैं
बात आज नोट की
मतदाता भी

गंभीर नहीं
राजनीतिक दल
राष्ट्र के लिए

लड़ाई आज
मात्र कुर्सी पाने की
सिद्धांत नहीं

न्याय विरोधी
करते बात सदा
आज न्याय की

दे रहे धोखा
रट लगानेवाले
सदा न्याय की

महत्व होता
पालतू प्राणी का ही
राजनीति में

नेतागण को
है रोग जन्मजात
अहंकार का

भ्रष्ट हैं लोग
शासन-बागडोर
हाथों जिनके

प्रेरित होते
अग्रणी नेताओं से
नागरिक भी

धरे बैठे हैं
हाथ पे हाथ रख
सत्ता के लोग

दिखाई देता
मौसेरे भाइयों में
अपार प्रेम

अधिकांशत:
अकेला ही दिखता
सही पथिक

प्रयास कभी
निष्फल नहीं जाता
शाश्वत सत्य

होती उपेक्षा
विवेक व ज्ञान की
राजनीति में

राजनीति है
भावना का नाम
आज हुज़ूर

बेच डाला है
देश की मर्यादा को
नेताओं ने ही

राजनीति के
इस महाग्रह को
बचाना होगा

रजनेता ने
हमारे भारत का
भट्ठा बैठाया

नेता ने बाँटा
टुकड़ों-टुकड़ों में
समाज को भी

धज्जी उड़ाते
राजनेता हमारे
नैतिकता की

खाँसती रही
सरकार सदैव
दुख-दर्द पे

सोये हुए हैं
कुंभकर्णी निद्रा में
नेतागण भी

अति उदार
राजनेता आज के
आश्वासन में

भूल गए हैं
सारे सूत्र, नेता ही
नैतिकता के

गद्दारी की है
कुर्सी के दलालों ने
आमजन से

नेता के लिए
कुर्सी ही माई-बाप
जनता सिक्का

बने विदेशी
पर कहें स्वदेशी
नेता की माया

एक ही लक्ष्य
चमड़ी-दमड़ी ही
आबाद रहे

चरित्र-बल
हो गया लोप आज
राजनीति में

है भरी पड़ी
आज की राजनीति
आशंकाओं से

कहाँ है मेल
कथनी-करनी में
राजनेता की

कोई भी नेता
कम नहीं किसी से
आश्वासन में

हैं चल रहे
संगीनों के साए में
नेता आज के

अपनाती है
कभी राजनीति भी
वक्र मार्ग ही

चूँ-चूँ करता
हमारे भारत में
अनुशासन

हैं सब बौने
नेताओं के सामने
आज देश में

नहीं चलती
राजनीति में कभी
परंपरा भी

मंत्री के आगे
पुलिस हिलाती है
दुम क्यों आज?

देते दिखाई
समस्याओं की जड़ में
भ्रष्ट नेता ही

न बन पाया
राजनीतिक नक्शा
देश का कोई

राजनीति के
जंगल जलधि में
सब हैं डूबे

इस देश को
कहाँ ले जा रहे हैं
यहाँ के नेता

नहीं चाहते
समस्याओं से मुक्ति
देश के नेता

राजनीतिज्ञ
डाले बैठा मुखौटा
समाज-बीच

राजनीतिक
स्पर्धा है मंडल को
कमंडल से

नहीं चलता
जनांदोलन अब
पार्टियों द्वारा

भ्रष्टाचार

तंग जनता
आतंक, हिंसा और
भ्रष्टाचार से

भ्रष्टाचार

खिलौने बनें
कबतक हम भी
भ्रष्ट हाथों के?

बचते रहे
कानूनी शिकंजे से
सत्ता के लोग

बेमिसाल था
भ्रष्ट आचरण का
तंदूरकांड

हिंदुस्तान में
बढ़ता भ्रष्टाचार
है चिंतनीय

अवसर दें
जिसे देश सेवा का
वही लूटता

दलदल में
राजनीतिक दल
भ्रष्टाचार के

दीखते चौड़े
रास्ते बेईमान के
दिन-ब-दिन

जन-धन से
उड़ाते गुलछर्रे
राजकुमार

फरियाद क्यों?
जब कातिल ही हो
हुकमरान

तंग जनता
आतंक, हिंसा और
भ्रष्टाचार से

मौज उड़ाते
जनता के धन से
नेता के बेटे

जो भ्रष्टाचार
निकलता दिल्ली से
गंगा नदी है

लंबित न्याय
आमजन के लिए
न के समान

बुरा नतीजा
होता है हमेशा से
बुरे काम का

अब आई है
अवसान की बेला
भ्रष्टाचारी के

तमाम उम्र
भुगतना पड़ता
गलतियों से

है बेच दिया
घोटालेबाजों ने ही
इस देश को

लड़नी होगी
स्वतंत्रता की एक
और लड़ाई

नहीं चाहते
भ्रष्टाचारी जगाना
चेतना आज

खोखला किया
भ्रष्टाचारियों ने ही
इस देश को

अँधे हो रहे
कनक की खनक
बैराए हुए

इस देश में
भ्रष्टाचार फैलता
कैंसर जैसा

गाँव

पच्चास साल

आजादी के, ज्यों-का-त्यों
गाँव का हाल

गाँव

सूखा या बाढ़
कुदरत की मार
गाँव उजाड़

समस्या सब
मुँह बाए खड़ी
गाँव में आज

उजड़ रहे
गाँव, स्थूलकाय
शहर आज

हुकमरान
चाहते नहीं आज
ग्राम-विकास

कलतक जो
किए बात गाँव की
हैं आज कहाँ?

है झेल रहा
दंश उपेक्षा का ही
हमारा गाँव

पच्चास साल
आजादी के, ज्यों-का-त्यों
गाँव का हाल

बरकरार
आतंक का माहौल
आज गाँव में

है बेमिसाल
तिरंगे गड़ांग के
राष्ट्र के झंडे

राष्ट्रीय ध्वज
गाँव से शुरू होती
यही कहानी

है अनुछुआ
गाँव भी आजतक
योजनाओं से

गाँवों की फिजां
क्या बदलेगी कभी
इस देश में?

गाँव की चिंता
स्वाभाविक लगती
देवगौड़ा की

गाँव में आज
जन साधारण का
महासागर

परेशान हैं
जहरीली गंध से
खेत व गाँव

कृषि व गाँव
हमारे यहाँ हुए
पर्याय जैसे

जी रहे लोग
जहालत-जिंदगी
गावों में आज

पिछड़ गया
प्रगति की दौड़ में
गाँव हमारा

ग्राम समाज
की टूटन को आज
होगा बचाना

झुलस रहा
गाँव हिंसा की आग
प्रतिहिंसा में

नजदीक हैं
हम गाँव के ज्यादा
शहर से भी

निकलता है
खुशहाली का रास्ता
गाँव होकर

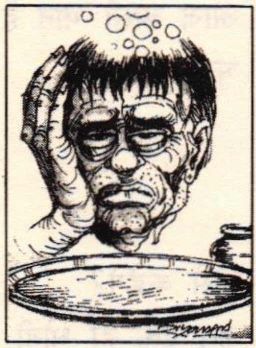

गरीबी

बंध न पाता
गरीबों का दर्द भी
आज शब्दों में

गरीबी

है नीची आज
वजह बेरोजगारी,
गरीबी रेखा

डालें टुकड़ा
मुँह में अनाथों के
रोटी-दाल का

खाया उसने
आज बासी भात है
भूख के बाद

सुनते सब
वेदना झोपड़ी की
सोचते कम

गरीबों पर
मुझे पसंद नहीं
आँसू बहाना

कैसे कहेंगे?
जब एक ही धोती
धोना रोज

आँगन पानी
छप्पर टप-टप
हाल गरीबी

क्या बचा रखूँ
आड़े दिनों के लिए
और क्या खाऊँ?

सोचें विचारें
गरीबी मिटाने को
आज ही हम

काटी उसने
खुले आसमां तले
पूस की रात

बंध न पाता
गरीबों का दर्द भी
आज शब्दों में

राजनीति ने
बार-बार छला है
गरीबों को ही

नन्हा भूखा है
माँ सुनाती लोरियाँ
क्या तंगदस्ती

मंहगाई ने
देश की जनता की
तोड़ी कमर

चपेट में हैं
नारों और वादों की
गरीब यहाँ

घबड़ाने से
गम भागेगा नहीं
बढ़ जाएगा

इस पवित्र
भारत की भूमि पे
निस्सहाय वो

बन चुकी है
मुकद्दर लोगों की
बेरोजगारी

सहने पर
गम हौसला देगा
इसे जानिए

कितने लोग
नौकरी की तलाश
डिग्री हाथों में

भाग रहे हैं
ग्राम-वासी शहर
रोटी के लिए

चूसता बच्चा
पत्थर तोड़ती माँ
के सूखे स्तनों

खींचता रिक्शा
तर-बतर पसीना
बूढ़ा अस्सी का

क्या माँगता तू
अब बाँटकर मैं
खाली हाथ हूँ

घाव हमारे
क्यों उम्मीद उनसे
मरहम की?

मेरे गम से
उन्हें सदैव मिली
खुशी ही खुशी

स्वप्निल आँखों
के संकेतों को पढ़ें
आज की माँग

हर आदमी
बुझते वर्तमान
से उब रहा

ख्वाब टूटे तो
मायूस मत होना
जगाएगा वो

क्या पा सकेगा?
ओ पर-कटे पंछी
मुक्त आकाश

अंतर तो है
लोहे और व्यक्ति में
कहें किससे?

नहीं मिलता
गरीबों को आज भी
निष्पक्ष न्याय

जोड़ना होगा
समाज के दीनों को
मुख्यधारा से

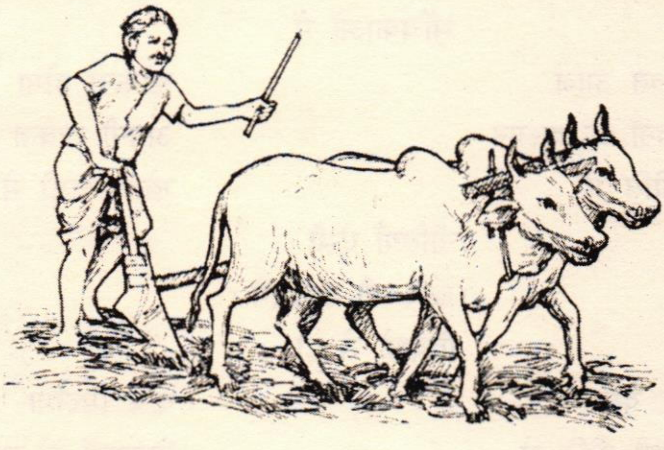

किसान

कब मिलेगा
किसानों के प्रयास
का फल उन्हें

किसान

न ठीक दशा
आज न कोई दिशा
किसानों की भी

है बढ़ा दर्द
आज किसानों का ही
सबसे ज्यादा

उद्योग-दर्जा
कृषि को, सरकारी
संचिकाओं में

विषाक्त आज
किसानों के दालान
राजनीति से

झोंकना होगा
अपनी ताकत को
खेती-बाड़ी में

नीतियाँ ऐसी
खाद भी खरीदेंगे
विदेशों से ही

चौपट दशा
सरकारी नीति से
खेतीहर की

कब मिलेगा
किसानों के प्रयास
का फल उन्हें

अपना बीज
न बो सकेंगे हम
अपने खेत

कृषि नीतियाँ
हैं अमल में नहीं
एक भी आज

कृषि विकास
के बाद ही विदेशी
निवेश ठीक

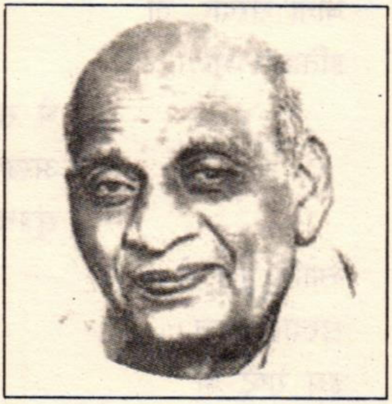

सरदार पटेल

याद कीजिए
सबों को जोड़कर
सरदार को

सरदार पटेल

संवाहक थे
राष्ट्रीय चेतना के
लौह पुरुष

सुरभित था
पटेल का व्यक्तित्व
माटी-गंध से

होते अगर
बौना सरदार, तो
इतिहास भी

थे ओत-प्रोत
भारतीयता से ही
लौह पुरुष

थे सरदार
अखण्ड भारत के
सूत्रधार

ज्योति पुंज थे
सरदार पटेल
इस राष्ट्र के

याद कीजिए
सभी को जोड़कर
सरदार को

लौह पुरुष
सच में सरदार
माना संसार

संवाहक भी
अग्रगामी सोच के
थे सरदार

लौह पुरुष
सदैव अलग थे
औरों से कुछ

झुकता सर
पटेल के समक्ष
श्रद्धा भक्ति से

कारगिल

शीश झुकाते
हे भारत के लाल
तुम्हें, स्मृति में

कारगिल

दिखाई पड़ी
देशभक्ति-भावना
कारगिल में

स्वाधीनता भी
सतर्कता माँगती
याद रखिए

खबरदार!
नाम लिया युद्ध का
तुमने कभी

कहा पाक ने
आ बैल, मुझे मार
सुना आपने?

खाई कसम
नहीं सुधरने की
पाकिस्तान ने

पाकिस्तन को
याद आई युद्ध में
अपनी नानी

किया कमाल
कारगिल युद्ध में
सेनानियों ने

फल पाक को
पड़ेगा भुगतना
आज न कल

पड़ी झेलनी
परेशानी देश को
पाक नीति से

घुसपैठिए
मुँह के बल गिरे
कारगिल में

पाक-जनता
मूर्ख बन रही है
पाक-नेता से

गर्व है हमें
रणबाकुरों पर
कारगिल के

कल के लिए
वीरों ने कुर्बानी दी
अपना आज

थू-थू कर दीं
पाक-हरकतों कों
पूरी दुनिया

कारगिल का
विजय अभियान
आहुति पर

कारगिल में
हौसले बुलंद थे
रणवीरों के

देश पड़ोसी
आस्तीन में लिपटा
दिख रहा है

चढ़ाती भेंट
शांति की बेदी पर
मैंने जीत को

पाकिस्तान ने
कारगिल युद्ध में
घुटने टेके

ताकत से ही
राष्ट्र विरोधियों का
हो मुकाबला

बड़ा पुराना
पाक की दगाबाजी
का इतिहास

उभर आतीं
शहीदों की स्मृतियाँ
मानस मेरे

शुभाशंसा

कविवर सिद्धेश्वर द्वारा लिखित **सुर नहीं सुरीले** हिंदी के नूतन प्रयोगों के साथ संबद्ध एवं प्रतिबद्ध है। यह एक सेनूर्‌यू काव्य-संग्रह है, जिसे सुकवि सिद्धेश्वर ने जापानी छंद **हाइकु** का एक अंग प्रतिपादित किया है। समकालीन हिंदी रचनाधर्मिता में संप्रति अनेक विधागत गतिविधियाँ सक्रिय हैं। इसलिए इस नूतन आयाम की रचना का भी अपना आस्वाद तथा परिवेश है।

इसके प्राक्कथन में कवि सिद्धेश्वर ने अपनी अवधारणा को सुस्पष्ट एवं सुबोध किया है। सुर तो सुरीले तब ही होंगे, जब हम सब मिलकर अपने समाज तथा देश के लिए सोचेंगे और करेंगे। इस संग्रह का शीर्षक वर्तमान विसंगतियों, विडंबनाओं तथा प्रवंचनाओं को उद्‌घाटित करता है।

कवि ने कविताओं में तीक्ष्ण एवं मार्मिक बातें कही हैं। एक ओर किसान हैं, तो दूसरी ओर कारगिल, लोकतंत्र, नारी, बुद्धिजीवी तथा राजनीति के संबंध में सिद्धेश्वर की यह काव्यकृति लोकप्रिय होकर हिंदी-जगत में स्वागत-तोरण बन सकेगी। साधुवाद!

पद्मश्री (डॉ.) लक्ष्मी नारायण दुबे
सागर, मध्य प्रदेश

कवि परिचय

संक्षिप्त नाम : सिद्धेश्वर

पूरा नाम : सिद्धेश्वर प्रसाद

जन्म : 18 मई, 1941 ई.

जन्म स्थान : ग्राम+पत्रालय बसनियावाँ, जिला-नालंदा (बिहार)

शैक्षणिक योग्यता : एम. ए., पटना विश्वविद्यालय, पटना

विशेष योग्यता : एस. ए. एस., भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग

सरकारी सेवा : भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में 36 वर्षों तक सेवा

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति : वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के पद से सन् 2000 ई. में स्वेच्छा से सेवा निवृत्त

प्रकाशित रचनाएँ : गद्य और पद्य की एक दर्जन रचनाएँ प्रकाशित

अन्य रचनाएँ : देश व समाज के ज्वलंत मुद्दों पर एक सौ से अधिक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित

सम्मान : देश के विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से अबतक एक दर्जन से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित

रुचि : समाज, साहित्य सेवा एवं पत्रकारिता

संप्रति : संपादक, 'विचार दृष्टि' एवं राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय विचार मंच

संपर्क : 1. 'दृष्टि', 6, विचार विहार, यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
दूरभाष : 011-22059410, 22530652
2. 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना—800001,
दूरभाष : 0612-2228519

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
दिल्ली

सिद्धेश्वर

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली